

फरवरी 2016

कीमत ₹ 10

# दादावाणी



आप लाख कड़वा नहीं पीना चाहो, तब भी लोग ज़बरदस्ती पिलाएँगे। उससे अच्छा तो हँसते-हँसते पीकर ऊपर से आशीर्वाद देकर ही क्यों नहीं पीएँ? इसके बिना नीलकंठ कैसे बन पाएँगे?

संपादक : डिम्पल महेता

वर्ष : 11 अंक : 4

अखंड क्रमांक : 124

फरवरी 2016

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,  
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,  
पो.ओ. : अडालज,  
जि. : गांधीनगर-382421.

फोन : (079) 39830100

email: dadavani@dadabhagwan.org

www.dadabhagwan.org

दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:  
8155007500

Printed & Published by  
Dimple Mehta on behalf of  
Mahavideh Foundation  
5, Mamtapark Society,  
Bh. Navgujarat College,  
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Owned by  
Mahavideh Foundation  
5, Mamtapark Society,  
Bh. Navgujarat College,  
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Printed at  
Amba Offset  
Basement, Parshvanath  
Chambers, Nr.RBI,  
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at  
Mahavideh Foundation  
5, Mamtapark Society,  
Bh. Navgujarat College,  
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन ( सदस्यता शुल्क )

१५ साल

भारत : ७५० रुपये

यू.एस.ए. : १५० डॉलर

यू.के. : १०० पाउन्ड

वार्षिक

भारत : १०० रुपये

यू.एस.ए. : १५ डॉलर

यू.के. : १० पाउन्ड

भारत में D.D. / M.O.

‘महाविदेह फाउन्डेशन’ के नाम  
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

# दादावाणी

## अपमान पचाओ हँसते मुख से

संपादकीय

जीवन में कदम-कदम पर अनेक घटनाएँ होती रहती हैं, वहाँ बुद्धि का चलाव शुरू हो जाता है और वह फायदा नुकसान तौलती ही रहती है और व्यवहार में जहाँ खुद को मान मिले, उसी को हितकारी मानती है। जबकि परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) कहते हैं कि, ‘अपमान ही बहुत हितकारी है।’ मान-अपमान तो अहंकार का कड़वा-मीठा रस है। आत्मज्ञान द्वारा मूल वस्तु पाने के बाद, अब अहंकार का रस खींच लेना है।

इस वर्ल्ड में ऐसा कोई पैदा ही नहीं हुआ जो हम में दखल कर सके। तो फिर अपमान क्यों आता है? उसमें मूल हिसाब खुद का ही है। वह सामनेवाला व्यक्ति तो निमित्त बन जाता है। वह हिसाब पूरा होने पर फिर कोई दखल नहीं करेगा। अगर कोई गाली दे और हमें पसंद नहीं हो, तो उसे जमा ही कर लेना है। पता नहीं लगाना है कि मैंने उसे कब दी थी? हमें तो तुरंत जमा कर लेनी कि हिसाब पूरा हुआ। फिर से उधारी करेंगे तो वे बहीखाते चलते रहेंगे। उसके बजाय अगर जमा कर लेंगे तो एक दिन उसका अंत आ जाएगा।

सामनेवाला जब अपमान करता है, तब हमारा एक्सेस (जरूरत से ज्यादा) अहंकार विलय कर देता है। उसमें क्या बिगड़ जानेवाला है? अगर एक बार तय कर लें कि कोई जो कुछ भी कड़वा दे वह पूरा पी लेना है, तो फिर पी पाएँगे। यह कड़वी दवाई अगर माफिक आ जाए तो फिर अन्य दखल ही नहीं रहेगी न! इसीलिए अपमान करनेवाले को उपकारी मानकर, हँसते-हँसते अपमान पचा लेना चाहिए। लेकिन अगर वहाँ ऐसी जागृति नहीं रहे और कभी ऐसे समय में मन से प्रतिकार चलता रहे, वाणी से प्रतिकार हो जाए, देह से भी प्रतिकार हो जाए, तो वह कमजोरी है। वहाँ प्रतिक्रमण करना पड़ेगा।

कोई हमें गाली देता है तो वह हमारे कर्म के उदय की वजह से है। इसलिए हमें मन में भाव नहीं बिगाड़ना है बल्कि कहना है, ‘उसका भला हो कि मुझे कर्म से मुक्त किया।’ और अगर भाव बिगड़ जाए तो तुरंत ही सुधार लेना है। दादाश्री अत्यंत करुणा से कहते हैं, ‘मोक्ष में जाना हो, तो यह कला सीख लो।’

जो अपमान करे, उसे ‘व्यवस्थित’ कहकर जाँच करनी है कि, ‘यह गोली आई कैसे? कहाँ से आई? मारनेवाला कौन है? क्या हुआ? किसे लगी? हम कौन?’ जैसे-जैसे गहराई में जाएँगे वैसे-वैसे ‘मूल वस्तु’ समझ में आएगी। चाहे कैसे भी अपमान के अवसर आएँ, लेकिन हमारी समाधि दशा चलित न हो, तो समझना कि हम सही रास्ते पर हैं। दुनिया की जिन बातों का हम पर असर नहीं होता, उनमें आत्मा की वह अनुभव कक्षा पूरी हो गई और जिन बातों में, जहाँ-जहाँ असर होता है, उस कक्षा का अनुभव बाकी है। कोई गाली दे, मारे, लूट ले तो भी कोई असर न हो, राग-द्वेष न हों तो समझना कि अद्वैत हो गए।

प्रस्तुत संकलन में मोक्षमार्ग पर प्रगति करने के लिए मान-अपमान के सामने जागृति के लिए परम पूज्य दादाश्री की वाणी में से विस्तारपूर्वक समझ यहाँ संकलित की गई है। जो महात्माओं को मोक्षमार्ग का पुरुषार्थ करने में सहायक हो, वही अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नजर आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

अपमान पचाओ हँसते मुख से

**थर्मामीटर से जान सकते हैं, असर की इन्टेन्सिटी**

जब हम ज्ञान देते हैं न, तब (आपको) शुद्धात्मा का लक्ष (जागृति) बैठ जाता है। यह लक्ष, वह एक प्रकार का अनुभव है अब इन पाँच आज्ञाओं का पालन करना है। प्रगति की शुरुआत करोगे और जैसे-जैसे जागृति उत्पन्न होगी वैसे-वैसे अनुभव बढ़ता जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** हमें उस अनुभव की कक्षा का पता कैसे चलेगा?

**दादाश्री :** दुनिया की जिन बातों का असर हम पर नहीं होता, उतनी अनुभव कक्षा पूरी हो गई और जिन बातों का, जहाँ-जहाँ असर हो जाए, वह कक्षा अभी बाकी है।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, असर नहीं डाले तो वह वास्तव में आत्मा जानने के कारण है या अन्य किसी कारण से, उदासीन भाव जागने से वह चीज़ हुई है?

**दादाश्री :** आत्मा जानने की वजह से वह कुछ समझ में आता है। फिर जब थोड़ा सा अनुभव होता है न, उसके बाद कुछ भाग (असर होना) बंद हो जाता है। और जहाँ अनुभव कच्चा हो, वह भाग अभी कच्चा रह जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** क्या इसका कोई थर्मामीटर है कि आगे बढ़ रहे हैं या नहीं, वह जानने के लिए?

**दादाश्री :** वह थर्मामीटर तो आत्मा ही है। वह बता देता है कि, ‘अभी ठीक नहीं है, यहाँ तक

का अनुभव ठीक है।’ आत्मा थर्मामीटर की तरह काम करता ही रहता है।

आज्ञा पालन का थर्मामीटर

**प्रश्नकर्ता :** आज्ञा में रहते हैं या नहीं, यह कैसे पता चलेगा?

**दादाश्री :** वह तो सब पता चल जाता है कि यह आज्ञा में ही रहता है। उससे समाधि रहती है, निरंतर। कोई गालियाँ दे या कुछ और कहे, लेकिन उस पर कोई असर ही नहीं होता न! मारे, लूट ले फिर भी राग-द्वेष न हो, वह है उसका थर्मामीटर। थर्मामीटर चाहिए न? रोने में हर्ज नहीं है, राग-द्वेष नहीं होने चाहिए। अगर किसी को मारें और वह रोए, वह तो अगर शरीर कोमल होगा तो रोएगा और मजबूत होगा तो हँसेगा। वह नहीं देखना है। हमारे राग-द्वेष गए या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** तो दादा, इसका मतलब यह (ऐसा) हुआ न कि कोई हमें गाली दे तो हमारा चेहरा बिगड़ जाएगा, लेकिन अंदर उसके प्रति राग-द्वेष नहीं होंगे।

**दादाश्री :** (इतनी) अभी कमी है। बाद में तो चेहरा भी नहीं बिगड़ेगा। अभी चेहरा बिगड़ जाए तो उसमें हर्ज नहीं है। रोए तो भी हर्ज नहीं है। मार सहन न कर पाए, इसलिए रोए तो भी हर्ज नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** चेहरा बिगड़ जाता है। वह कमजोरी है?

**दादाश्री :** कमजोरी ही है न! वर्ना और क्या है? अपमान पचाना, वह तो महान बलवानपना है।

अगर राह चलते हुए आप से कोई कहे कि, 'आप नालायक हो, चोर हो, बदमाश हो,' ऐसी गालियाँ दे और आपको वीतरागता रहे तो जानना कि इस बात में आप उतने ही भगवान बन गए। जितनी बातों में आप जीत गए उतनी बातों में आप भगवान बन गए और जगत् जीत लिया तो फिर पूर्ण भगवान बन गए, फिर किसी के साथ भी मतभेद नहीं होगा।

### दखल में मूल हिसाब खुद का ही

**प्रश्नकर्ता :** कोई कुछ कह दे, उसमें (तब) समाधान कैसे रखें? समभाव कैसे रखें?

**दादाश्री :** अपना ज्ञान क्या कहता है? कोई आपका कुछ कर ही नहीं सकता। वर्ल्ड में ऐसा कोई पैदा ही नहीं हुआ है कि जो आपमें कुछ दखल कर सकता हो! कोई किसी में दखल कर सके ऐसा है ही नहीं। तो फिर यह दखल क्यों आती है? आपमें जो दखल करता है वह आपके लिए निमित्त है, लेकिन उसमें मूल हिसाब आप ही का है। कोई उल्टा करे या सीधा करे, लेकिन उसमें हिसाब आप ही का है और वह निमित्त बन जाता है। वह हिसाब पूरा होते ही (हुआ कि) फिर कोई दखल नहीं करेगा।

इसीलिए निमित्त के साथ झगड़ना बेकार है। निमित्त को काटने से वापस गुनाह खड़ा होगा। इसलिए इसमें करना कुछ भी नहीं है। यह विज्ञान है, यह सब समझ लेने की ज़रूरत है।

सामनेवाला गालियाँ देने आए तो क्या हमें समझ नहीं जाना चाहिए कि यह अपनी पहले की मिस्टेक है? इसलिए हमें उसका समभाव से निकाल (निपटारा) करना है।

### अपमान वह अपने ही काँज का परिणाम

कोई अच्छा फंक्शन चल रहा हो और आपके

सभी लोग बैठे हों, उनमें से कोई व्यक्ति दो-तीन बार अगर आपका अपमान कर दे, उसी दिन, उस एक ही घंटे में, तो आपको क्या करना है, वह समझने की ज़रूरत है। क्या करना चाहिए?

**प्रश्नकर्ता :** उसके दो उपाय हैं, या तो अपमान पी (सहन कर) लो, या फिर अपमान के सामने अपमान करो।

**दादाश्री :** उसे पी लेना भी गुनाह है। फिर तो रात-दिन उस पर बैर बढ़ेगा, मानसिक बैर बढ़ेगा। और अगर उसके अपमान के सामने अपमान करोगे, तो भी गुनाह है। तो फिर क्या करना है, वह मैं आपको बताता हूँ कि अगर किसी ने तीन बार अपमान किया, तो हमें (सोचना चाहिए) कि यह अपमान क्यों किया। यह भाई और किसी का अपमान नहीं कर रहे हैं और मेरे हिस्से में कहाँ से आ गए? ऐसा सोचने पर (लगेगा कि) क्या कोई काँजेज होंगे? अपमान किया, वह कार्य है, उसका काँज तो होगा न?

**प्रश्नकर्ता :** होगा।

**दादाश्री :** अब वह काँज अन्डर ग्राउन्ड (सूक्ष्म में) है। हम नहीं जानते कि इसका काँज क्या है, लेकिन इतना ज़रूर समझ लेना कि आपके काँज की वजह से ही यह परिणाम है, इफेक्ट है। इसलिए आपको उससे क्या कहना है कि 'ऑलराइट (ठीक है), आपका और मेरा हिसाब चुक गया।' अब अगर आपके तीन अपमान किए हों, तो मनुष्य का स्वभाव कैसा है कि उसके पाँच करता है। यानी तीन जमा करने में दुःख होता है और फिर पाँच उधार देता है! तो क्या जो पाँच उधार दिए हैं, वे वापस नहीं आएँगे? अतः जो काँजेज किए थे वे काँजेज क्या कम दुःखदाई हैं कि फिर से नए काँज खड़े करें? नहीं, उसका एन्ड (अंत) ला देना है। मेरी बात आपकी समझ में आई कि क्या कहना चाहता हूँ? सीधा और सरल मार्ग।

वह आपको कोई भी चीज़ दे रहा है तो वह आपके ही कॉज़ का परिणाम है। वह परिणाम भुगत लेना है, तो वापस नए कॉज़ खड़े नहीं होंगे। हम परीक्षा देने के समय आइस्क्रीम खाने चले जाएँ और होटल में घूमें और फिर नापास हो जाएँ, उसमें किसी का क्या गुनाह (दोष)? हमने खराब कॉज़ेज किए इसीलिए इफेक्ट खराब आया। अब फिर से कॉज़ेज नहीं करेंगे तो (इफेक्ट) नहीं आएगा।

### हिसाब पूरा करने के लिए जमा करो

‘अगर आप में कोई दोष नहीं है, तो वर्ल्ड में कोई आपका नाम लेनेवाला नहीं है।’ इसकी गारन्टी लिख देता हूँ और ‘अगर नाम लेता है तो आपका दोष है।’ ऐसा मानकर आपको वह जमा कर लेना है, फिर से उधार नहीं करना है। दो गालियाँ दे जाएँ और फिर वापस पाँच देंगे, तो फिर वापस आएँगी। इसके बजाय हमारा उसके साथ व्यापार ही बंद। फिर से (गालियाँ) अच्छी नहीं लगे तो दो गालियाँ जमा कर लेनी है। वापस पाँच दोगे तो फिर वापस पाँच आएँगी।

**प्रश्नकर्ता :** यानी वे दो ही गालियाँ आई, वे हिसाब से आई?

**दादाश्री :** बिना हिसाब के कोई चीज़ आपके घर नहीं आती। वह इफेक्ट है, विसर्जन है, इसीलिए हिसाब से आई है। तब कहेगा कि, ‘क्या मैंने बहीखाते देखे बगैर लिखे हैं?’ अरे, बिना हिसाब के नहीं आती, इसीलिए तू अब जमा कर ले न। ‘अच्छा साहब, जमा कर लूँगा’ कहता है। अगर पाँच देनी है तो दे, तुझे पसंद हो तो। व्यापार, सौदा पसंद हो तो उधारी चढ़ा। खुद को गाली सहन नहीं होती और औरों को पाँच देता है। जो खुद को पसंद नहीं है, वह औरों को देना भयंकर गुनाह है। ऐसा नहीं होना चाहिए। अगर कोई हमें दे जाता है तो वह नियमानुसार है। उसे ऐसा पूछने मत जाना कि ‘तू क्यों दे रहा है,’ उसे जमा ही कर लेना है।

कोई गाली दे और वह हमें पसंद नहीं हो फिर भी उसे जमा ही कर लेना है, जाँच नहीं करनी है कि मैंने उसे कब दी थी, हमें तो तुरंत ही जमा कर लेना है कि हिसाब पूरा हो गया।

कोई कहेगा, ‘इससे मुझे अब कोई लेना-देना ही नहीं है, फिर भी वह गाली क्यों दे गया?’ वह अगर आज के बहीखाते का हिसाब नहीं होगा तो पिछले बहीखाते का हिसाब होगा। और उसके यहाँ जमा कराए बगैर, यों ही कोई आपके यहाँ जमा नहीं करवाएगा।

इस जगत् में बिना हिसाब के तो आँखें तक नहीं मिलतीं। तो और कुछ क्या बिना हिसाब के होता होगा? आपने जितना-जितना जिस-जिस को दिया होगा, उतना-उतना वह आपको वापस करेगा। तब आप उसे जमा कर लेना। खुश होकर कि हा! अब हिसाब पूरा होगा। वर्ना यदि भूल करेंगे, तो फिर से भुगतना पड़ेगा ही।

हम किसी को छेड़ें तो उसके फल स्वरूप कोई हमें परेशान करता है। बाकी अगर हम नहीं छेड़ेंगे, तो कोई हमारा नाम नहीं देगा! आप स्वतंत्र ही हो। जितनी भूलें की हैं उतनी भुगतनी तो पड़ेंगी न! जब से यह जाना कि आप स्वतंत्र हो, लेकिन एकदम (बिल्कुल) स्वतंत्र नहीं हो गए हो। आप स्वतंत्र हो, लेकिन फिर भी कहोगे कि यह व्यक्ति हमारा अपमान क्यों कर गया? अरे भाई, उस अपमान को आप खाते में जमा कर लो। लोग जो कुछ भी देने आएँ, वह बहीखाते में जमा कर लो। पहले जो माल दिया था, वही वापस आता है। उस घड़ी हमें वह सहन नहीं हो पाता इसीलिए फिर से उसे दे देते हैं इसलिए फिर आगे व्यापार जारी रहा। इसलिए कोई अगर एक बार आपका अपमान कर जाए तो उसे जमा कर लेना है कि, ‘भाई, अच्छा हुआ। मेरे कर्म के उदय की वजह से, मेरे किए का फल मुझे मिलना था, उसमें तू निमित्त बन गया। तूने मुझे उस



कर्म से छुड़वाया! इसलिए मैं तेरा उपकार मानता हूँ।' ऐसा करके हमें जमा कर लेना है, तो आपकी भूलें खत्म होंगी, वर्ना भूले खत्म नहीं होतीं।

**उधार बंद, जमा चालू तो आएगा अंत**

**प्रश्नकर्ता :** एक बार जमा करें, दो बार जमा करें, सौ बार जमा करें, ऐसे हर बार जमा ही करते रहना है?

**दादाश्री :** हाँ, फिर से उधार दोगे तो फिर वे खाते चलते रहेंगे। उसके बजाय, 'लाख बार तू जमा करवा न, हम जमा कर लेंगे,' ऐसा रहा तो फिर उसका अंत आएगा।

**प्रश्नकर्ता :** इतने साल बीत गए फिर भी अभी तक अंत नहीं आया है।

**दादाश्री :** अन्य कुछ सोचने के बजाय मेरे कहे अनुसार करना न, (तो) अंत आ जाएगा। और मैंने जमा किए हैं, ऐसे बहुत सारे। हम अट्टाईस सालों से नया उधार नहीं देते। तो सभी बहीखाते कितने साफ हो गए। उधार देना बंद कर दिया और जमा ही करते रहे। 'हमने' 'पटेल' से कह दिया था कि, 'भाई, जो कोई देने आए, उसका जमा कर लेना।'

मार्ग आसान है न! अर्थात् ऐसा है अपना विज्ञान। और बहीखाते के हिसाब पूरे तो होने ही चाहिए न? आपको क्या लगता है?

**प्रश्नकर्ता :** होने ही चाहिए।

**दादाश्री :** और अपने पड़ोसी से कहना कि 'आप सुबह-सुबह मुझे पाँच गालियाँ देना।' तब वह क्या कहेगा कि, 'मैं क्या फालतू बैठा हूँ?' अर्थात् जहाँ हिसाब नहीं है, वह कोई गाली देगा ही नहीं न! और जहाँ हिसाब है, वह छोड़ेगा नहीं।

**आएँगे हिसाब घर बैठे**

गालियाँ देने के लिए अपमान करनेवाला किराए पर रखें तो हमें क्या फायदा होगा? क्यों?

**प्रश्नकर्ता :** उनका असर नहीं होगा न, गालियों का। एकजेक्ट (यथार्थ), जैसा होना चाहिए वैसा असर नहीं होगा।

**दादाश्री :** उनका असर ही नहीं होगा। किराए पर रखे हुए का क्या असर? तो यह अपने आप असर हो, ऐसा मिले तब हमें समझना चाहिए कि भाई, पैसा देने से भी नहीं मिलता, इसलिए उसका लाभ उठा लो। मेरा क्या कहना है? आपको वह छोड़ेगा तो नहीं। इसके बजाय अच्छी तरह खा लेना न आराम से! और निश्चित है, फिर किराए का नहीं है इसलिए एकजेक्ट है। उस घड़ी, वह हमारी कितनी शक्ति, कितना बैलेन्स-शीट बढ़ा देगा? बढ़ जाएगा या नहीं बढ़ेगा? आप तय करोगे न तो अपने आप जमा होगा हमेशा। तय नहीं करो (तो) क्या होगा? कहता है, क्या होगा? हम शुद्धात्मा हैं, बाकी क्या होनेवाला है?

अर्थात् (अपमान) अब घर बैठे आए न, तो स्वीकार लेना। क्या करना है? हम किराए पर रखेंगे तो नहीं हो पाएगा। वह किराएवाला गालियाँ कितनी और कैसी दे, क्या पता? कैसा अपमान करेगा? हम भी समझ जाएँगे कि 'भाई, यह किराएवाला है, कोई बरकत नहीं है। उसमें मिर्ची नहीं डली होती न? जबकि हमें तो वैसा चाहिए जिसमें मिर्ची-विर्ची ठीक से डाली हुई हो। किराएवाला मिर्ची ठीक से नहीं डालता न! इसलिए यदि घर बैठे अपमान-वपमान वगैरह आ जाए तो स्वीकार कर लेना। मेरा क्या कहना है? 'चंदूभाई' अपमान स्वीकार करेंगे या नहीं करेंगे?

**खुश होकर जमा कर लो**

**प्रश्नकर्ता :** स्वीकार करेंगे। समय के अनुसार बरतना होता है न?

**दादाश्री :** नहीं, समय के अनुसार नहीं। वह तो जब आए तब चाहे किसी भी समय, चाहे कैसा भी हो, वह हमें स्वीकार कर लेना है, तो वह

शक्ति देकर जाएगा। बैलेन्स-शीट में हमें इस तरफ जितना मिलेगा, उतनी ही हमें शक्ति देगा। अगर एक बार अपमान में समता रही न तो दूसरी बार दो अपमान (में समता रखने) की शक्ति आएगी, ऐसा नियम है। मल्टिप्लिकेशन (गुणाकार) का नियम है। तो ऐसा लाभ क्यों न लें? अपमान से कहना 'घर बैठे, समय के अनुसार नहीं, जब आना हो तब आना भाई।'

उसका थर्मामीटर बाज़ार में नहीं मिलता है, अपने घर पर एकाध हो तो अच्छा। अभी यह कलियुग है, दूषमकाल है, इसलिए घर में दो-चार 'थर्मामीटर' होते ही हैं, एक नहीं होता! नहीं तो हमें कौन नापेगा? किसी को किराए पर रखें, तो भी नहीं करेगा! किरायेवाला अपना अपमान करेगा, लेकिन उसका मुँह फूला हुआ नहीं होगा, इसलिए हम समझ जाएँगे कि यह बनावटी है! और यह तो 'एक्सेक्ट'! मुँह-वुँह फूला हुआ, आँखें लाल, पैसे खर्च करने पर भी ऐसा नहीं हो सकता जबकि यह तो हमें मुफ्त में मिलता है!

मुफ्त में कोई गाली नहीं देता। मान मुफ्त में मिल सकता है लेकिन अपमान तो आपके पाँच सौ (रुपए) देने पर भी नहीं मिलेगा। वह तो, अगर पहले दिया होगा तभी देगा। भगवान ने क्या कहा है कि, 'अगर मोक्ष में जाना हो तो दिया हुआ ले लो।'

### प्राप्त संयोगों का लाभ उठा लो

अगर मैं अपमान की माँग करूँ, कल पेपर (अखबार) में टेन्डर भर दूँ कि मुझे अपमान दे जाओ, लेकिन कोई फालतू नहीं है। पीठ पीछे जो बोलना है तो बोल सकते हैं, लेकिन मुँह पर तो कोई नहीं बोलेगा।

मान-अपमान करने के लिए कोई भी फालतू नहीं बैठा है। अपना ही हिसाब हमें देना है। कोई फालतू होगा ऐसा व्यापार करने के लिए? मान-अपमान (तो) हमें जागृत रखते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** कि 'सो मत, जाग जा।'

**दादाश्री :** हाँ, 'जागो, जागो।'

**प्रश्नकर्ता :** अतः अगर कोई हमें गाली दे तो हमें खुश होना चाहिए न कि हमारा हिसाब चुक रहा है?

**दादाश्री :** हाँ, और खुश होकर जमा कर लेना है कि चलो, इतना पिछला हिसाब आया। उधार दी हुई रकम डूब जाए उसके बजाय जितनी वापस आई उतनी अच्छी न! इसलिए बहीखाते में जमा कर लेना है। जितना उधार दिया होगा उतना ही वापस आएगा। उधार नहीं होगा वह नहीं आएगा।

### इसमें नुकसान क्या है?

**प्रश्नकर्ता :** टकराव टालने की, 'समभाव से निकाल' करने की हमारी वृत्ति होती है, फिर भी सामनेवाला व्यक्ति हमें परेशान करे, अपमान करे तो क्या करना चाहिए हमें?

**दादाश्री :** कुछ नहीं। वह अपना हिसाब है, तो उसका 'समभाव से निकाल' करना है आपको ऐसा निश्चित रखना चाहिए। आपको अपने नियम में ही रहना चाहिए, और अपने आप अपना 'पज़ल' 'सॉल्व' करते रहना (उलझन सुलझाते रहना) चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** सामनेवाला व्यक्ति अपना अपमान करे और हमें अपमान लगे, उसका कारण अपना अहंकार है?

**दादाश्री :** सच में तो सामनेवाला अपमान करता है, तब आपका अहंकार विलय कर देता है, और वह भी 'ड्रामेटिक' अहंकार। जितना एक्सेस अहंकार होता है वह विलय होता है, उसमें क्या बिगड़ जानेवाला है? ये कर्म छूटने नहीं देते हैं। हमें तो, छोटा बच्चा सामने हो तो भी कहना चाहिए, 'अब छुटकारा कर।'

### अपमान स्वीकार करने से बढ़ेगी शक्ति

**प्रश्नकर्ता :** दादा, व्यवहार में व्यू पोइन्ट के टकराव के कारण, बड़ा छोटे की भूल निकालता है, छोटा अपने से छोटे की भूल निकालता है, तो ऐसा क्यों होता है?

**दादाश्री :** यह तो ऐसा है न कि बड़ा छोटे को खा जाता है। बड़ा छोटे की भूल निकाले, उसके बजाय हम कह दें, 'मेरी ही भूल।' यदि भूल हमारे सिर पर ले लें, तो उसका हल निकल आए। हम क्या करते हैं? दूसरा यदि सहन नहीं कर सके, तो हम अपने सिर ले लेते हैं, औरों की भूल नहीं निकालते। क्यों किसी को देने जाएँ? हमारे पास तो सागर समान पेट है। देखिए न, इस मुँबई की सभी गटरों का पानी सागर अपने में समा लेता है न? वैसे ही हमें भी पी लेना है। इससे क्या होगा कि इन बच्चों पर, और सब पर प्रभाव पड़ेगा। वे भी सीखेंगे। बच्चे भी समझ जाएँगे कि इनका पेट सागर समान है। इसलिए जितना आए उतना जमा कर लो। व्यवहार का नियम है कि अपमान करनेवाला खुद की शक्ति देकर जाता है। इसलिए अपमान स्वीकार कर लो हँसते-हँसते।

### बाकी रहा इतना पुरुषार्थ

कविराज क्या कहते हैं?

*“हँसते मुखे झेर पीवे, नीलकंठी खानदान।  
निस्पृह अयाचकने, खपे नहीं मान-तान।”*

अब अपना इतना पुरुषार्थ बाकी रहा कि 'हँसते मुख से ज़हर पीओ' कभी बेटे के साथ कोई मतभेद हो जाए, बेटा विरुद्ध हो जाए, तो फिर जो 'प्याला' (अपमान) दे जाए, वह पीना तो पड़ेगा न? रोते-रोते भी पीना तो पड़ेगा न? वह 'प्याला' थोड़े ही उसके सिर पर मार सकते हैं? पीना तो पड़ेगा न?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, पीना पड़ेगा।

**दादाश्री :** दुनिया रो-रोकर पीती है, हमें

हँसकर पीना है! बस, इतना ही कहते हैं। दुनिया क्या करते हुए पीती है? रोते हुए कि, 'इसने ऐसा किया और इसने यह पिलाया और वह पिलाया।' खुद के पास एक आनंद तो है ही, लेकिन हँसने से उसका साइकोलॉजिकल (मानसिक) आनंद भी मिलता है। साइकोलॉजी (मानस शास्त्र) क्या कहती है कि, 'आप हँसोगे तो आपको आनंद मिलेगा।' और वह स्वाभाविक आनंद तो अपने पास है ही, मूल स्वाभाविक आनंद और यह साइकोलॉजिकल आनंद, दोनों मिल जाएँ तो फिर चाय कितनी अच्छी बनेगी? अच्छी नहीं बनेगी?

**प्रश्नकर्ता :** अच्छी बनेगी।

**दादाश्री :** जबकि उसमें तो चाय बिगड़ जाती है और सब बिगड़ जाता है। इसीलिए ये क्या कहते हैं कि, 'हँसकर भुगतो।'

### हिसाबवाला है तो पीना तो पड़ेगा ही

हम नीलकंठ हैं। बचपन से जो भी कोई ज़हर दे गया, वह हम हँसते-हँसते और ऊपर से आशीर्वाद देकर पी गए, इसलिए ही हम नीलकंठ हुए।

ज़हर तो आपको पीना ही पड़ेगा। हिसाबी है, इसलिए प्याला तो सामने आएगा ही। फिर आप हँसते-हँसते पीएँ या मुँह बिगाड़कर पीएँ, पीना तो पड़ेगा ही। अरे, आप लाख पीना नहीं चाहें, तब भी लोग ज़बरदस्ती पिलाएँगे। तो फिर हँसते-हँसते पीकर ऊपर से उन्हें आशीर्वाद देकर क्यों नहीं पीएँ? इसके बिना नीलकंठ कैसे हो पाएँगे? जो प्याला दे जाते हैं, वे तो आपको ऊँचा पद देने आते हैं। वहाँ पर यदि आप मुँह बिगाड़ेंगे, तो वह पद आपसे दूर चला जाएगा।

### आशीर्वाद देकर बनो महादेव जी

ये सभी रिश्तेदार हैं न, वे आकर इतनी बड़ी कड़वी डोज़ दे जाते हैं उसे आराम से पी लेना है, वह भी आशीर्वाद देकर कि 'अच्छा हुआ, तू मुझे महादेव जी बनाने के लिए दे रहा है इसीलिए तेरा



भला हो। इतना तेरा उपकार।' ऐसा मानकर पी लेना है। आप पी सकोगे?

**प्रश्नकर्ता :** अब तो सभी कुछ पी सकेंगे।

**दादाश्री :** हाँ, तो पीना शुरू कर दो। इक्कीस सालों तक चलने दें तो बन गए महादेव जी। वह सब ज़हर फिर यहाँ (गले में) हज़म हो जाता है और हरा, हरा हो जाता है। रास्ता कठिन है या आसान है? क्या कहते हो?

**प्रश्नकर्ता :** कांटे की नोकवाला है।

**दादाश्री :** हाँ, यह लड्डू खाने का खेल नहीं है वर्ना लोग कब के महादेव जी बन चुके होते। लोगों को महादेव जी बनना बहुत अच्छा लगता है लेकिन यह रास्ता बहुत कठिन है न, इसलिए लौट आते हैं। बन सकोगे आप? शुरू कर दो न! आशीर्वाद देकर ले लेना है कि तू मुझे महादेव जी बनाने के लिए दे रहा है। क्या आपको पसंद आई बात?

**प्रश्नकर्ता :** ठीक है।

**दादाश्री :** ऐसा? बात है तो कठिन लेकिन सही है न? गलत नहीं है।

मैं ही शंकर और मैं ही नीलकंठ, क्यों कहा है क्योंकि इस संसार में जिस-जिसने ज़हर पिलाया वह सारा का सारा पी गए। और अगर आप पी जाएँ तो आप भी शंकर बन जाओगे। कोई गाली दे, कोई अपमान करे तो भी आशीर्वाद देकर, समभाव से सारा ज़हर पी जाओगे तो आप शंकर बन जाओगे। यों समभाव नहीं रह पाता लेकिन जब आशीर्वाद देते हैं, तब समभाव आ जाता है। यदि सिर्फ समभाव रखने जाएँगे तो विषमभाव हो जाएगा।

**कड़वे को पचाए तो बने नीलकंठ**

अगर सामनेवाला कड़वा पिलाए और आप हँसते-हँसते आशीर्वाद देकर पी जाओ तो एक तरफ आपका अहंकार धुलेगा और आप उतने मुक्त होंगे

और दूसरी तरफ सामनेवाले को, कड़वा पिलानेवाले को भी रिप्लेशन (प्रतिघोष, प्रत्याघात) आएगा और वह भी बदल जाएगा। उसे भी अच्छा लगेगा। वह भी समझ जाएगा कि कड़वा पिला रहा हूँ, वह मेरी कमजोरी है और वह हँसते मुख से पी लेता है, वह बहुत शक्तिशाली है।

अगर हमें अपने आप कड़वा पीने को कहा हो तो हम अपने आप पिँएँ क्या? यह तो सामने से कड़वा पिलाते हैं वह तो कितना उपकारी? परोसनेवाला तो 'माँ' कहलाता है, फिर वह लिए बगैर चले ऐसा नहीं है। नीलकंठ बनने कड़वा पीना पड़ेगा।

**कड़वाहट की मिठास का आनंद लो**

(और वह भी फिर) कोल्ड ड्रिंक की तरह पी लेना है। धीरे-धीरे पीना है, एकदम से नहीं। अगर एकदम से पी ले तो समझ लेना कि यह भयभीत है। इसे अच्छा नहीं लग रहा है। इस पर रूचि नहीं है। कड़वा हो तो एकदम से पी लेता है। 'अरे भाई, एकदम से क्यों पी रहा है? धीरे-धीरे पी न' कहना है। कड़वाहट की मिठास पता चलेगी। अगर हम एकदम से पी लेंगे, तो जो कड़वी चीज़ है उसकी मिठास का पता कैसे चलेगा?

**कड़वे को पचाना सीख लो**

'हमें' तो 'चंदूभाई' को कह देना है कि 'तुझे सौ बार यह कड़वा पीना पड़ेगा।' बस, फिर उसकी आदत हो जाएगी। बच्चे को कड़वी दवाई ज़बरदस्ती पिलानी पड़ती है। लेकिन यदि वह समझ जाए कि यह (मेरे लिए) हितकर है, तो फिर ज़बरदस्ती पिलानी नहीं पड़ती। अपने आप पी लेता है। एक बार नक्की किया कि कोई जो भी कड़वा पिलाए उसे पी लेना है, तो फिर पिया जाएगा। मीठा तो पी सकते हैं, लेकिन कड़वा पीना आना चाहिए। कभी न कभी तो पीना ही पड़ेगा न? यह तो फिर मुनाफा है, इसलिए पीने की प्रैक्टिस कर लेनी चाहिए न?

**प्रश्नकर्ता :** बल्कि आपने तो कहा है न कि मन को कड़वा पिलाओ, तब जुदा रहना चाहिए। ऐसे पुरुषार्थ में रहना चाहिए।

**दादाश्री :** 'वह' (मन) कड़वा पीए तब हमें ऐसे तालियाँ बजानी चाहिए, 'हं, अब ठिकाने आए! उसके बिना तुम ठिकाने पर आओ ऐसे थे नहीं!'

**प्रश्नकर्ता :** साथ में ऐसा कहना पड़ेगा अंदर?

**दादाश्री :** ऐसा कहा कि बढ़े आगे। फिर दुःख नहीं रहेगा, दुःख स्पर्श नहीं करेगा। 'बहुत रौब मारते थे न, लो, अब स्वाद चखो!'

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा कहना है? ऐसा कहने से क्या इफेक्ट (असर) होगा अंदर?

**दादाश्री :** कहने से अंदर सबकुछ शांत हो जाएगा कि अब हाथ में से लगाम गई। मन-वन सबकुछ शांत हो जाएगा।

यह कड़वी दवाई यदि रास आ जाए, तो फिर और कोई झंझट ही नहीं रहती न? फिर अब आपको मालूम हो गया है कि इसमें हमारा ही मुनाफा है। जितना मीठा लगता है, उतना ही कड़वा भरा पड़ा है। इसलिए पहले कड़वा पचा लो, फिर मीठा सहज ही निकलेगा। उसे पचाना बहुत भारी नहीं पड़ेगा। कड़वी दवाई पच गई, तो बहुत हो गया। फूल लेते समय हर कोई हँसता है, पर पत्थर पड़ें तब?

### तब होगा अहंकार निरस

कड़वे-मीठे अहंकार के पद में से आपको खिसकना है न? फिर उसमें पैर क्यों रखते हैं? नक्की करने के बाद दोनों ओर पैर रखना चाहिए क्या? नहीं रख सकते। रूठना कब होता है? जब किसी ने कड़वा परोस दिया तब।

अहंकार को खुद निरस करना बहुत कठिन कार्य है। इसलिए यदि कोई निरस कर देता हो, तो बहुत अच्छा है। उससे अहंकार नाटकीय रहेगा और

अंदर का बहुत सुचारू रूप से चलेगा। यदि यह इतना फायदेमंद है, तो अहंकार को निरस करने हँसते मुख ही क्यों नहीं पीएँ?

जैसे-तैसे करके सारा रस पिघला दें, तो निकाल हो जाए। अहंकार तो काम का है, वर्ना संसार व्यवहार कैसे चलेगा? अहंकार को सिर्फ निरस बना देना है।

अहंकार का स्वभाव है कि नाटकीय रूप से सारा का सारा काम कर देगा। यदि आपका कड़वा-मीठा रस निरस हो गया हो तो! अहंकार को खत्म नहीं करना है, उसे, निरस करना है। (अहंकार संपूर्ण निरस हुआ, तो समझो आत्मा पूर्ण हो गया। इतना नक्की कीजिए कि अहंकार निरस करना ही है, तो फिर वह निरस होता ही रहेगा।

### ज्ञान से अहंकार का रस खींच लो

मूल वस्तु पा गए, फिर अब अहंकार का रस खींच लेना है। राह चलते कोई कहे, 'अरे, आप कमअक्ल हैं, सीधे चलिए।' उस समय अहंकार खड़ा होता है, वह अहंकार सहज ही टूट जाता है। गुस्सा आता है। लेकिन उसमें गुस्सा करने को क्या रहा? हमें अब गुस्सा करने जैसा रहता ही नहीं है। अहंकार का जो रस है, उसे खींच लेना है।

अपमान किसी को पसंद नहीं आता, लेकिन हम कहते हैं कि वह तो बहुत हेल्पिंग (मदद रूप) है। मान-अपमान तो अहंकार का कड़वा-मीठा रस है। अपमान करता है, वह तो आपका कड़वा रस खींचने आया है। 'आप कमअक्ल हैं', ऐसा कहा, मतलब, सामनेवाले ने वह रस खींच लिया। जितना रस खींच लिया उतना अहंकार टूटा और वह भी बिना मेहनत के दूसरे ने खींच दिया। अहंकार तो रसवाला है। जब अनजाने में कोई निकाले तब अगन लगती है इसलिए जानकर सहज रूप से अहंकार को कटने देना। सामनेवाला सहज रूप से खींच देता हो, उससे बढ़कर और क्या हो सकता है? सामनेवाले ने कितनी बड़ी हेल्प (मदद) की कहलाएगी।

हमें जिसे धोना था, उसे दूसरों ने धो दिया, वही हमारा मुनाफा। हम ज्ञानीपुरुष अबुध होते हैं और ज्ञानी के पास इतनी शक्ति होती है कि वे खुद ही अहंकार का रस खींच सकते हैं। जबकि आपके पास ऐसी शक्ति नहीं है। इसलिए आपको तो कोई अपमान करके सामने से अहंकार का रस खींचने आए, तो खुश होना चाहिए। आपकी कितनी मेहनत बच जाए? आपका तो काम हो जाए। हमें तो, फायदा कहाँ हुआ यही देखना है। यह तो ग़ज़ब का मुनाफा हुआ ऐसा कहलाएगा। यदि सब लोगों के बीच में मान भंग हो जाए, तो घाटा हुआ ऐसा लगता है, लेकिन उसमें तो भारी मुनाफा है, यह समझ में आ जाए, तो फिर घाटे जैसा नहीं लगता न?

### अहंकार धुले तो रह सकते हैं स्व-पद में

हम विधि करते समय बोलते हैं कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ,' तो फिर शुद्धात्मा का रक्षण करना चाहिए या और किसी का? 'मैं शुद्धात्मा हूँ' बोलते तो हैं, तो फिर उसी पद में ही रहना है न? उसके लिए तो अहंकार धुलवाना पड़ेगा। कठोर परिश्रम करने का निश्चय करें, तो धुलेगा ही।

एक भिखारी को राजा बनाया हो और गद्दी पर बैठने के बाद यदि ऐसा कहे कि 'मैं भिखारी हूँ,' तो ऐसा कहना ठीक होगा क्या? 'शुद्धात्मा' का पद पाने के बाद दूसरा कुछ भी हमें नहीं होना चाहिए।

कोई व्यक्ति जेल से छूट कर प्रधानमंत्री बन जाए, तो बनने के बाद फिर रात-दिन वह भूलता नहीं न कि मैं प्रधानमंत्री हूँ, नहीं भूलता न? वह भूलता नहीं है, इसलिए अपना काम भी नहीं चूकता। अगर कोई प्रश्न पूछे न तो, 'मैं प्रधानमंत्री हूँ' ऐसा समझकर ही जवाब देता है। यानी हम शुद्धात्मा बन गए न, तो हमें 'शुद्धात्मा हूँ' समझकर ही जवाब देना है। जो बन गए उसी रूप का है यह, समझ लो। बाहर कर्म के उदय हों तो वह अलग चीज़ है, वे तो प्रधानमंत्री के भी प्रबल हो सकते हैं। कर्म के

उदय के कारण कोई पत्थर मारेगा, कोई गाली देगा। ये सभी कर्म के उदय तो उनको भी हैं न, लेकिन वे अपने प्रधानमंत्री के पद का फर्ज निभाते हैं, उसी तरह हमें शुद्धात्मा का फर्ज निभाना पड़ेगा। इस वजह से खुद यह भूल नहीं जाते कि 'मैं चंदूभाई हूँ,' यों भूल जाने से थोड़े ही चलेगा? सब लक्ष में रहता ही है!

'मैं चंदूलाल हूँ', तब तक सब कड़वा लगता है, लेकिन हमारे लिए तो यह सब अमृत हो गया है! मान-अपमान, कड़वा-मीठा वे सारे द्वंद्व हैं। जो अब हमें नहीं रहे, हम द्वंद्वातीत हैं। इसलिए तो यह सत्संग करते हैं न? आखिरकार तो सभी को द्वंद्वातीत दशा ही प्राप्त करनी है न?

### जहाँ प्रतिकार, वहाँ करना है प्रतिक्रमण

**प्रश्नकर्ता :** अपमान होता है तब अच्छा नहीं लगता, तो तब वहाँ क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** उसमें हर्ज नहीं है, लेकिन जब अपमान होता है तब हमला नहीं करते न?

**प्रश्नकर्ता :** वैसी वाणी निकल जाती है, वाणी से 'अटैक' (हमला) हो जाता है।

**दादाश्री :** लेकिन आपका वैसा भाव नहीं है न?

**प्रश्नकर्ता :** बिल्कुल नहीं। वैसी वाणी निकलने के बाद खुद को बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। लेकिन ऐसी वाणी निकलना वह तो असंयम है न? इससे कोई फायदा नहीं होगा न?

**दादाश्री :** लेकिन 'फर्स्ट' (पहला) संयम यानी अंदर ऐसा लगना चाहिए कि 'नहीं, ऐसा नहीं होना चाहिए। ऐसा क्यों हो जाता है?' यह पहला संयम शुरू होना चाहिए। सच्चा संयम वही कहलाता है। फिर धीरे-धीरे 'लास्ट' (अंतिम) संयम आएगा।

**प्रश्नकर्ता :** कभी अगर कोई ऐसा अपमान कर दे, तब वहाँ मन से प्रतिकार होता रहता है, वाणी से प्रतिकार शायद नहीं भी होता।

**दादाश्री :** उस समय जो कुछ हो गया, उसमें हमें हर्ज नहीं है। अरे! देह से भी प्रतिकार हो जाता है, फिर भी वह जितनी-जितनी शक्ति है, उसी के अनुसार व्यवहार होता है। जिनकी संपूर्ण शक्ति उत्पन्न हो गई है, उनका मन से भी प्रतिकार बंद हो जाता है। फिर भी हम क्या कहते हैं? मन से प्रतिकार होता रहे, वाणी से प्रतिकार हो जाए, अरे! देह से भी प्रतिकार हो जाए तो तीनों प्रकार की कमजोरियाँ खड़ी हो गई, तो वहाँ तीनों प्रकार का प्रतिक्रमण करना पड़ेगा। प्रतिक्रमण कर लिया तो साफ हो जाएगा। वह तो निकले बगैर रहेगा नहीं न!

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा कुछ हो रहा हो जो हमें पसंद नहीं है और उसे सहन कर लें, तो उसे प्रतिक्रमण कहते हैं आप?

**दादाश्री :** नहीं सहन नहीं करना चाहिए, प्रतिक्रमण करना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** तो प्रतिक्रमण क्या है?

**दादाश्री :** प्रतिक्रमण अर्थात् सामनेवाला हमारा अपमान करता है तो हमें समझ लेना चाहिए कि इस अपमान का गुनहगार कौन है? वह करनेवाला गुनहगार है या भुगतनेवाला गुनहगार है? यह पहला डिसिजन (निर्णय) हमें लेना चाहिए। अपमान करनेवाला बिल्कुल भी गुनहगार नहीं होता, एक सेन्ट (प्रतिशत) भी गुनहगार नहीं होता। वह निमित्त होता है और अपने ही कर्म के उदय के कारण वह निमित्त आ मिलता है। इसलिए यह अपना ही गुनाह है। अब प्रतिक्रमण इसलिए करना है कि अगर उसके लिए खराब भाव हो जाएँ तो प्रतिक्रमण करना चाहिए। उसके प्रति मन में ऐसा विचार आ जाए कि 'नालायक है, लुच्चा है' तो प्रतिक्रमण करना है और ऐसा विचार नहीं आए और आप उसका उपकार मानते हो तो प्रतिक्रमण करने की जरूरत नहीं है। बाकी कोई भी गाली देता है तो वह अपना ही हिसाब है, वह व्यक्ति तो निमित्त है। ज़ेब काट ले तो काटनेवाला निमित्त

है और हिसाब अपना ही है। यह तो निमित्त को ही काटने दौड़ते हैं और उसी के झगड़े हैं।

### प्रतिक्रमण करके करो साफ

यह तो जंजाल है सारा। तुझे उनके लिए जितने (उल्टे) विचार आएँ, उतने प्रतिक्रमण करते रहने हैं। जब कभी भी कोई विचार आ जाए तो उसके प्रतिक्रमण करते रहना। उन्हें तुरंत मिटा देना है। प्रतिक्रमण करने से फिर हमारे अटैक के सारे विचार बंद हो जाते हैं। उससे फिर मन में द्वेष नहीं होता। जिनके प्रति मन चिढ़ता है तो उनके प्रतिक्रमण करने से वह फिर बंद हो जाता है। मानसिक अटैक हो जाए तो फिर उसका प्रतिक्रमण करना है। निम्न जातिवाले मारपीट करते हैं और हम लोग शब्द से मारते हैं, वर्ना मन से मारते हैं। शब्द से मारते हैं या नहीं मारते?

**प्रश्नकर्ता :** मारते हैं।

**दादाश्री :** ये बहनें तो कहती हैं कि, 'अभी भी कलेजे से शब्द नहीं निकल पाता, ऐसी चोट लगी है मुझे।' ऐसे शब्द बोलते हैं। और जो मन से मारते हैं, वे भी उसके घर के ही लोग होते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** मन से यानी बिना बोले ही न?

**दादाश्री :** अगर शब्द बोलेंगे न, तो वह अगर ऐसी हो कि हावी हो जाए तो फिर उसे मन से मारते हैं। पति भी अगर पत्नी पर हावी हो जाए ऐसा हो तो वह मन से मारती है, 'जब मौका मिलेगा तब मैं उसे सीधा करूँगी।' फिर मौका ढूँढती है।

### सावधान रहो मन के स्पंदनों के सामने

**प्रश्नकर्ता :** कोई बुरी घटना घटी हो और सामनेवाला व्यक्ति आपके लिए बुरा बोले या करे तो उसके रिप्लेक्सन से अंदर हमें जो गुस्सा आता है, वह जीभ से शब्द बुलवाता है, लेकिन मन अंदर से कहता है कि 'यह गलत है,' तो ज़्यादा दोष बोलने से लगता है या जो मन से किए, उससे लगता है?

## दादावाणी

**दादाश्री :** अगर जीभ से करता है न, तो वह झगड़ा तभी हिसाब देकर चला जाता है। जबकि मन से किया हुआ झगड़ा आगे बढ़ेगा। जीभ से करते हैं न, वह तो हमने सामनेवाले से कहा है इसलिए वह भी दे देता है। तुरंत उसका फल मिल जाता है और जो मन से करते हैं उसका फल तो जब वह फल पकेगा, तब। अभी बीज रोपा वह काँजेज़ कहलाता है। इसलिए काँजेज़ नहीं पड़े, उसके लिए अगर मन से हो जाए तो मन से प्रतिक्रमण करना है।

**प्रश्नकर्ता :** इसमें कभी हमें बुरा लग जाता है कि मैं इतना सब करता हूँ, फिर भी यह मेरा अपमान कर रहा है?

**दादाश्री :** आपको उसका प्रतिक्रमण करना चाहिए। यह तो व्यवहार है। इसमें सभी प्रकार के लोग हैं। वे मोक्ष में नहीं जाने देते। ऐसा बुद्धिवाला जगत् है सारा। इसीलिए इसमें से ऐसे सावधान होकर चलना है, समेटकर चलना है, संकुचित होकर चले जाना है।

**प्रश्नकर्ता :** वह प्रतिक्रमण हमें किस चीज़ का करना है?

**दादाश्री :** प्रतिक्रमण इसलिए करना है कि 'इसमें मेरे कर्म का उदय था, इस वजह से यह आ मिला और आपको ऐसा कर्म बाँधना पड़ा। उसका प्रतिक्रमण करता हूँ और फिर से ऐसा नहीं करूँ कि जिसके कारण किसी को मेरे निमित्त से ऐसा कर्म बाँधना पड़े।'

**निमित्त मिलता है अपने ही कर्म के उदय से**

**प्रश्नकर्ता :** फिर भी अगर कोई निमित्त मिल जाए और कषाय हो जाएँ तो क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** भले ही कषाय हो जाए। निमित्त कषाय खड़े होने का कारण नहीं है, सिर्फ आपने भगवान की आज्ञा का पालन नहीं किया है। भगवान का कहना क्या है कि यह आपके कर्म के उदय की वजह से है। आप क्यों परेशान होते हो? आपके कर्म

के उदय हैं और वे निमित्त हैं। समझदार व्यक्ति निमित्त को काटने नहीं दौड़ता।

कोई आपको गालियाँ देता है या आपका नुकसान करता है तो वह आपके कर्म के उदय की वजह से है। वह बेचारा तो निमित्त मात्र है। आपको ऐसा लगता है कि वही ऐसा कर रहा है। इसलिए आपको गुनाह दिखाई देता है। जहाँ गुनाह नहीं कर रहा, वहाँ गुनाह दिखाई देता है। आप अगर सिर्फ इतना ही करो न, आप सिर्फ मेरे इतने वाक्य का पालन करो न कि, 'जो सब हो रहा है, वह मेरे कर्म के उदय की वजह से हो रहा है। सामनेवाला का दोष नहीं है, वह निमित्त है।' अगर इतना ही पालन करो न तो आप मोक्ष में जाओगे।

शुरुआत में मुझ पर जो सभी (अटैक) करते थे न, (वे) फिर थक गए। हमारी तरफ से अटैक नहीं था न! सामने हमला नहीं होता न हमारा! अगर सामने से हम हमला करें न तो ये लोग थकेंगे नहीं।

**प्रश्नकर्ता :** और कुछ नहीं करता, सिर्फ मन में लगता है, उतना ही।

**दादाश्री :** मन में लगे उसमें हर्ज नहीं, लेकिन अगर बाहर से अटैक किया तो यह जगत् थकेगा नहीं। अंदर जो लगता है, उसका प्रतिक्रमण कर लेना है।

**समतापूर्वक हल ले आओ**

**प्रश्नकर्ता :** हमें जो सहन करना पड़ता है, उसका उपाय क्या है?

**दादाश्री :** हमें तो सहन कर ही लेना है, यों ही चिल्लाना नहीं है। सहन करना है और वह भी फिर समतापूर्वक सहना करना है। मन में सामनेवाले को गालियाँ देकर नहीं बल्कि समतापूर्वक, कि भाई, 'मेरा जो कर्म था, तूने मुझे भुगतवाया और मुझे कर्म से मुक्त किया।' इसलिए उसका उपकार मानना है। सहन कोई मुफ्त में नहीं करना पड़ता, वह हमारे ही दोष का परिणाम है।



आप्तवाणी  
**अक्रमे विक्रम**  
 न लूतो, न लविष्यति  
 दि. 19 दिसम्बर 2015

परम पूज्य दादाश्री की भावना के अनुसार- आप्तवाणी-14 भाग-5 के विमोचन के अवसर पर भव्य समारोह



श्री सीमंधर स्वामी रथ



दादा नीरू माँ रथ



अक्रम प्रसार रथ



नीरू माँ समर्पण रथ



महात्माओं के साथ शोभायात्रा निहारते पूज्य श्री



शोभायात्रा - एरियल व्यू



विविध थीम प्रदर्शन



साधकों और महात्मा हर्षोल्लास के साथ





अक्रम सेनानी - पूज्य श्री रथ



आप्तवाणी प्रदर्शन

पुलिस ब्रेड गान



सांस्कृतिक कार्यक्रम







दादा की वाणी पर प्रदर्शन





चंदूभाई को एक व्यक्ति 100 लोगों के सामने चार गालियाँ दे गया, अब कर्म के उदय की वजह से वह दे गया। इसलिए हमें जानना है कि यह मेरे कर्म के उदय की वजह से है और वह निमित्त बना है। तब हमें मन में क्या करना चाहिए? उसके प्रति भाव नहीं बिगाड़ने हैं बल्कि आशीर्वाद देने हैं कि, 'उसका भला हो कि मुझे इस कर्म से मुक्त किया। इस कर्म से छुड़वाया।'

'इसने मेरा अपमान किया!' छोड़ो न! अपमान तो निगल जाने जैसा है। पति अपमान करे तब याद आना चाहिए कि यह तो मेरे ही कर्म का उदय है और पति तो निमित्त है, निर्दोष है। और जब मेरे कर्म के उदय बदलते हैं, तब पति 'आओ-आओ' करता है। इसलिए आपको मन में समता रखकर निबेड़ा ला देना है।

### जमा करके छूट जाओ

चार गालियाँ खाकर भी छूट तो गए न, यानी हल्के हो गए न और अब छूटते समय बीज न डलें इतना ही देखना है। लोग चार गालियाँ खाते तो हैं लेकिन उल्टे बीज डाल देते हैं। वापस उसे पाँच गालियाँ दे देते हैं। अरे! चार तो सहन नहीं कर पाते, लेकिन दे दी वापस पाँच वापस! ये चार जमा कर ले न! अगर तुझ से सहन नहीं हो पा रही हैं तो वापस उधार क्यों दे रहा है?

इस तरह भटकता ही रहता है (और) व्यर्थ के गुनाहों में वह आ जाता है। इसलिए किसी के लिए भाव मत बिगाड़ना और अगर बिगड़ जाँएँ तो सुधार लेना, तुरंत ही। और मोक्ष में जाना हो तो यह कला सीख जाओ कि 'हम इसमें कैसे काम निकाल लें,' वह कला ज्ञानीपुरुष सिखाते हैं कि इस तरह निकल जाना।

### ज्ञानी की क्षमा होती है सहज

**प्रश्नकर्ता :** अपमान के भाव से खुद को

आघात लग जाए, तो उसे कैसे सुधारें? कैसे प्रतिक्रमण करें?

**दादाश्री :** सामनेवाले ने अपमान किया और हमें आघात लगे, तब?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, तो कैसे प्रतिक्रमण करना है?

**दादाश्री :** उसका प्रतिक्रमण हमें नहीं करना है, उसे करना है।

**प्रश्नकर्ता :** उसे कैसे भाव से सुधार सकते हैं?

**दादाश्री :** वह सुधारेगा, हमें नहीं सुधारना है। हमें तो क्षमा देनी है।

**प्रश्नकर्ता :** तो हमारे हिस्से में वह क्षमा देने का रहा न?

**दादाश्री :** जो हो गया है, उसके लिए व्यवहारिक तौर पर कहना पड़ेगा कि 'क्षमा।' बाकी यह वीर पुरुष की क्षमा नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** अनिवार्य है?

**दादाश्री :** नहीं व्यवस्थित ही है। उसमें तूने उसका क्या किया? उसमें तूने नया क्या किया? हमारी सहज क्षमा होती है। सामनेवाले से भूल हो जाए तो वह मन में पश्चाताप करता है। मैं कहता हूँ, 'जरा सा भी पश्चाताप मत करना, ठीक है।' यानी इसके पीछे हमारी सहज क्षमा ही होती है। क्षमा सहज होनी चाहिए।

### आप ही तय करो, क्या चाहिए?

**प्रश्नकर्ता :** कोई हम पर बुद्धि से गोली चलाता रहे और हमें परेशानी में डाल रहा हो तो हमें क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** ऐसा है न, अगर मोक्ष चाहिए तो देखते रहना है और अगर संसार चाहिए, भटकना हो तो हमें भी गोली मारनी चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** उसके जितनी बुद्धि हम में नहीं हो तो?

**दादाश्री :** बुद्धि हो तो भी अगर मोक्ष चाहिए तो उसे गोली मारने की क्या जरूरत है? और अगर संसार चाहिए तो उसे गोली मारते रहो। क्या चाहिए आपको?

**प्रश्नकर्ता :** मोक्ष चाहिए, लेकिन....

**दादाश्री :** भटकना अच्छा लगता है या यह (मोक्ष) अच्छा लगता है?

**प्रश्नकर्ता :** मोक्ष चाहिए लेकिन सामनेवाला हम पर गोली न चलाए, ऐसी इच्छा भी रहती है।

**दादाश्री :** नहीं, ऐसी इच्छा नहीं चलेगी। गोली चलाने देनी है। (हमने) जो गोलियाँ चलाई थीं, यह उसका फल आया है। यह गप्प नहीं है। इसीलिए ले लो और जमा कर लो।

### जगत् है न्याय स्वरूप

यह जगत् कोई गप्प नहीं है। जगत् न्याय स्वरूप है। बिल्कुल एक सेकन्ड भी अन्याय नहीं किया है कुदरत ने।

आपका अपमान करे तो वह आपका ही दोष है। इस दुनिया के दो कानून हैं। एक, वह गुनाह जो लोग देखते हैं। तो लोग क्या कहेंगे कि अपमान करनेवाला गुनहगार है। और कुदरत क्या कहती है कि आपका गुनाह है। आज आप पकड़ में आ गए इसलिए यह आपका हिसाब चुक गया। वह जब पकड़ा जाएगा तब उसका हिसाब वसूल होगा। अतः कुदरत हमेशा न्याय में ही रहती है। किसी भी प्रकार का अन्याय नहीं होता।

### मत सुनो बुद्धि की अब

‘हुआ सो न्याय’ इसे जान लेगा तो पूरे संसार का किनारा आ जाएगा। इस दुनिया में एक सेकन्ड भी अन्याय नहीं होता। न्याय ही हो रहा है। यानी कि

बुद्धि हमें फँसाती है कि ‘इसे न्याय कैसे कहा जाएगा?’ इसलिए हम मूल बात कहना चाहते हैं कि यह कुदरत का है और बुद्धि से आप अलग हो जाओ। बुद्धि इसमें फँसाती है। मोक्ष जाने में बुद्धि दखल रूप है और संसार में बुद्धि उसे हेल्प करती है। एक बार जान लेने के बाद हमें बुद्धि का नहीं मानना है। ‘हुआ सो न्याय,’ ‘भुगते उसी की भूल’। कोर्ट के न्याय में भूल-चूक हो सकती है, उल्टा-सीधा हो जाता है, लेकिन इस न्याय में कोई फर्क नहीं है। (इसलिए बुद्धि को) एक झटके से काट देना है।

कोई कहे कि चंदूभाई में अक्ल कम है, तो असर हो जाता है। जहाँ असर हो जाता है वहाँ सम्यक् बुद्धि है ही नहीं। सम्यक् बुद्धि का दिवाला निकल गया है। व्यवहार एडजस्ट करे और खुद नुकसान न उठाए, उसे सम्यक् बुद्धि कहते हैं। नया नुकसान न करें और पुराना नुकसान वसूल करें।

### कुदरत को न्यायी मानना, वह कहलाता है ज्ञान।

कुदरत के न्याय को अगर समझ लोगे तो आप इस जगत् से छूट सकोगे। अगर कुदरत को ज़रा सा भी अन्यायी समझा, तो वही आपका जगत् में उलझने का स्थान है। कुदरत को न्यायी मानना, उसे कहते हैं ज्ञान। जैसा है वैसा जानना उसे ज्ञान कहते हैं और जैसा है वैसा नहीं समझना उसे अज्ञान कहते हैं।

एक व्यक्ति ने दूसरे व्यक्ति को सुख दिया। एक व्यक्ति ने इस व्यक्ति का थोड़ा अपमान कर दिया, तो अपने ज्ञान द्वारा इसका न्याय क्या है? (ज्ञान) ऐसा कहता है कि यह भी मुक्त हुआ और वह भी मुक्त हुआ। यह अपने चार्ज किए हुए भाव से मुक्त हो गया और उसने वैसा चार्ज किया (था), वह उसमें से मुक्त हो गया। वे दोनों मुक्त हो गए न? सात से गुणा की हुई संख्या को नौ से भाग देंगे तो भाग नहीं लगेगा, वह तो सात से भाग देंगे तभी भाग लगेगा।

**प्रश्नकर्ता :** यानी दादा, उस ज्ञान से वह खुद अलिप्त रहता है न? उससे निर्लेप रहता है वह?

**दादाश्री :** हाँ, लेकिन (वह) है ही निर्लेप। निर्लेप है, असंग है लेकिन साथ-साथ यह भी है न! हिसाब चुकते जाते हैं। लेकिन जो अपमान चार्ज किए हैं, वे डिस्चार्ज अपमान द्वारा ही खत्म होंगे न! मान से किए हुए चार्जिंग मान द्वारा ही खत्म होंगे। इन दोनों को खत्म करने के लिए, उनका *निकाल* करना पड़ेगा न?

### व्यवहार निःशेष कर दो

व्यवहार किसे कहते हैं? नौ हो तो उसमें नौ से भाग लगाना। अगर नौ में बारह से भाग लगाएँगे तो व्यवहार कैसे चलेगा? न्याय क्या कहता है? नौ में बारह से भाग लगा दो! वहाँ फिर उलझ जाता है। न्याय तो क्या कहता है कि 'उन्होंने ऐसे-ऐसे कहा, इसलिए आपको ऐसे कहना चाहिए।' आप एक बार कहोगे तो सामनेवाला दो बार कहेगा। आप दो बार कहोगे तो सामनेवाला दस बार कहेगा। जब तक ये दोनों लट्टू घूमते रहेंगे तब तक व्यवहार है। जब दोनों बोलना बंद करेंगे तो व्यवहार का अंत होगा। व्यवहार का भागाकार होगा। व्यवहार यानी जिसमें शेष न बचे, वह।

व्यवहार तो लोगों को आता ही नहीं। व्यवहार कभी आया होता न, अरे, आधे घंटे के लिए भी आया होता तो भी बहुत हो गया! व्यवहार तो समझे ही नहीं हैं। व्यवहार मतलब क्या? *उपलक* (सतही, ऊपर ऊपर से, सुपरफ्लुअस)! व्यवहार का मतलब सत्य नहीं है। यह तो व्यवहार को सत्य ही मान लिया है। व्यवहार में सत्य मतलब 'रिलेटिव' सत्य। यहाँ के नोट सच्चे हों या झूठे हों दोनों 'वहाँ' के स्टेशन पर काम नहीं आते। इसलिए छोड़ो न इसे, और आप 'अपना' काम निकाल लो। व्यवहार मतलब दिया हुआ वापस करना, वह। अभी कोई कहे कि, 'चंदूलाल में अक्ल नहीं है' तो आप समझ जाना कि

यह दिया हुआ वापस आया! यदि यह समझोगे तो वह व्यवहार कहलाएगा। आजकल व्यवहार किसी में है ही नहीं। जिसके लिए व्यवहार, व्यवहार है; उसका निश्चय, निश्चय है।

### नहीं करना बदले में गोलीबार

यानी अगर बहीखाते बंद हो जाएँगे तो अवश्य ही मोक्ष होगा। वर्ना आप सामनेवाले को गालियाँ देकर आ गए और उन्हें वापस लेते समय आप किच-किच करते हो तो वह नहीं चलेगा।

**प्रश्नकर्ता :** यानी सामनेवाला गोलीबार करे तब हमें बचने का प्रयत्न नहीं करना है, इसका अर्थ यह हुआ?

**दादाश्री :** प्रयत्न तो, अगर हो सके तो करने हैं लेकिन (सामनेवाले का) नुकसान नहीं करना है। आपको उसके बारे में उल्टे विचार नहीं करने हैं। अगर वह गोलीबार करे तो भी आप गोलीबार बंद कर दो। सामनेवाला गोलीबार करेगा तो उससे आत्मा मर नहीं जाएगा।

और अगर भटकना हो तो उसका भी रास्ता है। आप बदले में दो मारो! भटकने का सामर्थ्य हो और भटकने की आदत पड़ी हो तो आराम से एक बार मारकर आओ। फिर वापस छुड़वानेवाले नहीं मिलेंगे। यहाँ तो छुड़वानेवाले मिल रहे हैं, तब भी ऐसी किच-किच होती रहती है। जो बुद्धि से गोलीबार करता है उसे आराम से अंदर से आशीर्वाद देते रहना कि, 'भला हो तेरा, तूने हमें कर्म से छुड़वाया।' जिसे यह पसंद नहीं है वह दो गोलीबार करे। (लेकिन) दोनों में से एक करो।

### हथियार नीचे रखकर चलना है

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन अगर हम में शक्ति होगी तभी दो गोलीबार करेंगे न?

**दादाश्री :** इसके बजाय चुपचाप सीधी तरह



## दादावाणी

से छोड़ दो न। शक्ति नहीं है और शेर की भूल निकालनी है? अच्छे-अच्छे शक्तिवालों ने छोड़ दिया न! हमने जिंदगीभर हथियार ही नहीं उठाया। सारे हथियार नीचे रखकर बैठा हूँ, क्षत्रिय होने के बावजूद भी! अगर सामनेवाला हथियार मारे तब भी मैंने वह नहीं उठाया है, अगर छूटना है तो हथियार छोड़ दो। वर्ना उठाओ हथियार और आ जाओ!

### आशीर्वाद देकर भूल स्वीकार लो

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, लेकिन हमें तकलीफ होगी न?

**दादाश्री :** तकलीफ नहीं चाहिए तो फिर आप संसार में भटको। क्या गलत है इस संसार में? हम किसी को तकलीफ देकर आए हों, और वह वापस आए तो उसमें गुनाह क्या है? इसीलिए तुरंत स्वीकार लो। हँसते हुए स्वीकार लो कि 'बहुत भला हो भाई उसका।' बुद्धि से गोली मारी, वर्ना दूसरी गोली मारता तो शरीर छूट जाता और बुद्धि से गोली मारी, वह तो अच्छा किया, जिंदा तो बचे न!

और फिर ये लोग तौलकर बोलते हैं या बगैर तौले बोलते हैं?

**प्रश्नकर्ता :** बगैर तौले।

**दादाश्री :** तब हमें ऐसा हिसाब निकालना है कि "अच्छा है न, 'सिर्फ चोर कह रहे हैं। लुचे हैं, बदमाश हैं, नालायक है।' ऐसा सब नहीं कह रहे हैं। इतने तो अच्छे हैं न।" वर्ना उनका मुँह है जितना चाहे उतना बोल सकते हैं। उन्हें हम थोड़े ही मना कर सकते हैं?

### अपमान करनेवाला महान उपकारी

**प्रश्नकर्ता :** 'आप्तवाणी' में ऐसा लिखा है कोई अगर कहे कि 'दादा चोर हैं' तो महान उपकार मानना है।

**दादाश्री :** उसका उपकार क्यों मानना चाहिए?

क्योंकि ऐसा कोई नहीं कहेगा। यह प्रतिघोष किसी चीज़ का है। यह मेरा खुद का ही प्रतिघोष है, इसलिए उपकार मानूँगा।

यह जगत् प्रतिघोष स्वरूप है। कुछ भी आए तो वह आपका ही परिणाम है, उसकी 100 परसेन्ट (प्रतिशत) गारन्टी लिखकर देता हूँ। इसलिए हम भी उपकार मानते हैं। तो आपको भी उपकार मानना चाहिए न? और तभी आपका मन बहुत अच्छा रहेगा। हाँ, अगर उपकार नहीं मानोगे तो उसमें आपका अहंकार खड़ा होकर द्वेष में परिणमित होगा। उसका क्या नुकसान होनेवाला है? आपने दिवाला निकाला। इसलिए आपको कहना है कि, 'भाई तेरा उपकार है।' तो फिर हमारा दिवाला नहीं निकलेगा, इसलिए। वह तो दिवालियाँ बनकर ही रहेगा, उसका क्या है? उसे दुनिया की पड़ी नहीं है, वह तो कहेगा हाँ, गैरजिम्मेदार वाक्य कौन बोलता है? जिसे अपनी जिम्मेदारी का भान नहीं है, वह बोलता है। तो उसके साथ हम भी भौंकने लगे, तो हम भी कुत्ते कहलाएँगे। इसलिए हमें कहना है कि, 'तेरा उपकार है।'

**प्रश्नकर्ता :** तो हमारे द्वेष के भाव उदय में आए, उन्हें हम देखें और शांत कर दे, इसीलिए हमें उसका उपकार मानना चाहिए?

**दादाश्री :** जहाँ-जहाँ द्वेष आता हो वहाँ-वहाँ अंदर से उपकार मानना, तो वह द्वेष बंद हो जाएगा। पुलिसवाले पर भी अभाव होने लगे तो उसका उपकार मानना, तब वह अभाव बंद हो जाएगा। अगर कोई भी व्यक्ति खटकने लगे तब अगर ऐसा रहे कि वह बहुत अच्छा इंसान है, वह तो बहुत उपकारी है, तो खटकना बंद हो जाएगा। हमें उपकार मानना है। उपकार मानने से हमारा मन नहीं बिगड़ेगा।

अपमान करनेवाला जब उपकारी माना जाएगा, तब आपका मन खत्म हो जाएगा! अपमान करनेवाले को उपकारी मानना चाहिए, उसके बजाय जहाँ अपमान हो वहाँ मनुष्य पीछे हट जाता है!

हमारे मन की संरचना ऐसी हो जानी चाहिए कि चाहे कितने भी अपमान खाए तो भी पच जाए। यह संरचना कब होगी? तब, जब अपमान मिलने पर हम जानें कि ओहोहो, जो दवाई मिल ही नहीं रही थी, वह आज मिली है!

### एडजस्टमेंट लेकर मन वश में रखो

अभी अगर कोई गाली दे तो भीतर से मन कहेगा, 'मारो दो धौल' तो? इसका तो प्रतिक्रमण करना चाहिए कि 'यह भूल हो गई। ऐसा नहीं होना चाहिए।'

सभी जगह पर साफ रखना चाहिए, वरना दिनोंदिन गुस्सा बढ़ता जाएगा और एक दिन मन उछल-कूद मचा देगा।

अरे, अपना सगे भाई के लिए भी 'यह नालायक है, लुच्चा है' ऐसे भाव हो जाते हैं और भाई के साथ प्रेम भी है, तब हमें क्या करना चाहिए? 'वह तो महान उपकारी है, उसकी वजह से तो हम जीवित रहे,' ऐसा सब बोलना चाहिए। यह एडजस्टमेंट लेना चाहिए।

### अनुभव सिद्ध ज्ञानी का प्रयोग

हमारी मानी हुई चीज़ कोई नहीं होती। हमारा मन वश हो चुका है। हमारा मन कुछ कहता ही नहीं। अगर अभी हमें कोई धौल मारे न तो भी कुछ नहीं, आशीर्वाद देते हैं। कोई गालियाँ दे तो भी आशीर्वाद देते हैं। जेल में डाल दे फिर भी आशीर्वाद देते हैं, पुलिसवाले को। अपमान करने के बावजूद भी आशीर्वाद दें वैसे सिर्फ 'ज्ञानीपुरुष' हैं।

हमें ठीक न लगे ऐसा व्यक्ति आए, तो हम कहते हैं कि, 'बहुत उपकारी है यह तो।' तब फिर मन अच्छा रहता है। नुकसान करनेवाला व्यक्ति आए तो भी हम कहते हैं कि, 'बहुत उपकारी इंसान है यह,' तो मन अच्छा रहता है।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन बुद्धि ऐसा कहने ही नहीं

देती। वह तो 'बहुत खराब है, खराब है,' ऐसा ही कहलवाती है।

**दादाश्री :** वह तो 'मना' करेगी। वह तो कहेगी ही नहीं किसी से। वह तो बल्कि ऐसा कहेगी कि 'यूज़लेस (बेकार) है, नालायक है।' तब हमें कहना है कि, 'आफ्टर ओल ही इज़ ए वेरी गुड मेन' (आखिर तो वे अच्छे व्यक्ति ही हैं)

दोषित तो कोई दिखना ही नहीं चाहिए। मन में भी नहीं होना चाहिए। बुद्धि में तो होना ही नहीं चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** तो फिर बुद्धि में कैसा होता है?

**दादाश्री :** बुद्धि क्लियर (साफ) होती है। कोई मुझे बहुत गालियाँ दे जाए तो, उसे मैं ऐसा कहता हूँ 'वह बहुत अच्छा इंसान है, उसके जैसा इंसान तो मिलेगा ही नहीं।'

**परवशता से करता है, उसमें उसका क्या दोष?**

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादा, हम जब ऐसा कहते हैं कि 'यह बहुत अच्छा इंसान है,' लेकिन फिर साथ में अंदर ऐसा दिखाता है कि, 'क्या अच्छा है? वह तो ऐसा कर गया, उसे कैसे अच्छा कह सकते हैं?'

**दादाश्री :** वह कहे तो भी हम फिर उसे समझाकर हमारा एडजस्टमेंट करवा देते हैं। उसे अच्छी तरह से सब समझाते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** ऐसी कौन सी समझ देते हैं उसे?

**दादाश्री :** अंत में यह समझाते हैं कि, वास्तव में आत्मा से, निश्चय से तो शुद्ध है और व्यवहार में वह बेचारा परवशता से कर रहा है, उसमें उस बेचारे का क्या दोष? ऐसा सब समझाते हैं, लेकिन अंत में उससे कबूल करवाते हैं। एक ही शब्द से नहीं होगा। बहुत तरह के शब्दों से समझाना पड़ेगा।

**प्रश्नकर्ता :** एक बार आपने ऐसा कहा था कि 'वह शुद्धात्मा है,' सिर्फ इतना कह देने से वह

निर्दोष नहीं दिखेगा। थोड़ी देर बाद मन फिर चढ़ बैठेगा। इसीलिए उसे सभी तरफ का दिखाएँगे तब वह ऐसा एक्सेप्ट (कबूल) करेगा कि 'निर्दोष है'।

**दादाश्री :** हाँ, मन सिर्फ इतना सा एक्सेप्ट करेगा ही नहीं न! मन ज्ञान की बात भी एक्सेप्ट नहीं करता। यह ज्ञान की ही बात है कि, 'भाई, वह परवशता से कर रहा है, उसमें उस बेचारे का क्या दोष?' जब हम ऐसा कहते हैं तब कहता है, 'ऐसा नहीं चलेगा।'

### व्यवस्थित समझने से रहेगी स्थिरता

जगत् के लोग 'व्यवस्थित है' ऐसा नहीं समझते। 'जो हुआ सो ठीक है' कहते हैं लेकिन हमें व्यवस्थित को समझ लेना है। अब 'अपने लोग' ज्यादा से ज्यादा चार बातों में व्यवस्थित समझते हैं लेकिन फिर उनका अपमान होने पर हिल जाते हैं लेकिन फिर तुरंत ही व्यवस्थित समझ में आ जाए तो स्थिरता रहती है। यह तो ऐसा है न, कितनी बातें रह जाती हैं। अगर कोई व्यवस्थित समझ जाए न तो उसे राग-द्वेष होंगे ही नहीं। पढ़ा है, ऐसा तो तब कहलाता है कि जब व्यवस्थित एक्जेक्ट (जैसा है वैसा) समझे।

आपको 'व्यवस्थित' समझ में आ गया है? अपमान की जगह पर जाना पड़े तो आपको क्या होता है? जब अपमान हो तब 'व्यवस्थित है' कहकर पता लगाना है या 'यह गोली लगी कैसे? आई कहाँ से? मारनेवाला कौन? क्या हुआ? किसे लगी? हम कौन?' जब तक व्यवस्थित समझ में नहीं आता तब तक ऐसे ही समझता है कि 'इसने मारी है मुझे, मैंने खुद देखा है न।' अर्थात् यह व्यवस्थित समझ गया होता न, तो वीतराग बन जाता।

### परमाणु का मिलन व्यवस्थित के अधीन

**प्रश्नकर्ता :** दादा, आपने कहा है कि एक परमाणु से दूसरे परमाणु का मिलन व्यवस्थित के लॉ

(नियम) के बिना नहीं हो सकता, तो फिर ये सभी जो गालियाँ आती हैं, वे सभी तो थोक में आती हैं तो वह व्यवस्थित ही है?

**दादाश्री :** बहुत अच्छी बात कही। हमारी सूक्ष्म बात तूने पकड़ ली। एक-एक परमाणु का मिलन व्यवस्थित के नियम से बाहर नहीं है तो फिर यह एक शब्द जो वाणी के रूप में निकलता है, उसके परमाणुओं को अलग करें तो पूरा रूम भर जाएगा। बिल्कुल शुद्ध परमाणुओं का भी मिलन व्यवस्थित के बगैर नहीं हो सकता, तो फिर इन अशुद्ध परमाणुओं की तो बात ही क्या करनी? एक-एक परमाणु व्यवस्थित के नियम के अधीन है।

### शुद्ध दृष्टि से देखो शुद्ध

(अब) किसी के साथ व्यवहार करो और कोई गालियाँ दे रहा हो तो उसे गाली देनेवाले की तरह नहीं देखना चाहिए। उसे 'शुद्धात्मा' देखना चाहिए। कौन गाली दे रहा है वह देखना है और वह कौन है, ऐसा भी देखना है। दोनों साथ में रहना चाहिए, ज्ञान। और अपना ज्ञान सभी को (इस तरह) रख सके, ऐसा है।

सामनेवाला हमें गाली दे और मारे तब भी यह भाव छोड़ना नहीं चाहिए कि 'वह शुद्ध ही है।'

### नहीं है कोई दोषित, तो दोष किसका?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, फिर भी सभी फाइलें होती हैं, वे हमारे लिए चाहे कितना भी बुरा करें, उनके प्रति अंदर से ऐसा बुरा भाव नहीं होता, लेकिन जब फाइल सामने आए तब सामनेवाला व्यक्ति निर्दोष दिखना चाहिए। ऐसा एकदम से होना चाहिए वह नहीं होता, थोड़ी देर बाद होता है।

**दादाश्री :** जागृति तो है लेकिन खुद कमजोर पड़ जाता है। पहले की आदत है न?

**प्रश्नकर्ता :** दादा, एक बार शुद्धात्मा में बिठाने के बाद कमजोर क्यों पड़ जाते हैं?

**दादाश्री :** कोई गाली दे तो फिर उसमें दखल करता है, उसे ऐसा लगता है कि मुझे गाली दी। वास्तव में उसे गाली नहीं दे रहा है। वह तो अपनी जगह पर ही है, तो फिर यहाँ क्यों आए? अक्रम विज्ञान क्या कहता है? दोषित कोई है ही नहीं।

लोगों ने 'कर्ता थ्योरी' देखी है लेकिन 'कर्म थ्योरी' नहीं देखी। 'इस आदमी ने मेरा अपमान किया' ऐसा कहते हैं। वह है 'कर्ता थ्योरी'। 'मेरे कर्म के उदय से गाली दे रहा है, वह है 'कर्म थ्योरी'। कर्म की थ्योरी अगर समझ जाए तो सामनेवाले का ज़रा सा भी दोष नहीं दिखेगा।

### पुरुष पद पर बैठकर निहारो प्रकृति

सामनेवाला गालियाँ दें तब मन में ऐसा रहे कि 'ओहोहो! यह कर्ता नहीं है। यह तो प्रकृति कर रही है।' तब वह पुरुष कहा जाएगा। लेकिन अभी तक स्थिरता नहीं आई है पुरुष जैसी, इसलिए विचलित हो जाता है। बाकी है पुरुष ही। अब जिसे निहारने का काम नहीं रहा, तुरंत ही, यों सुनते ही प्रकृति दिखाई देती है, वह परमात्मा हो गया।

सामनेवाला यदि हमें गालियाँ दे तो ये गालियाँ भगवान नहीं दे रहे हैं, यह तो प्रकृति स्वभाव इसे गालियाँ दे रहा है। इतना घटा दें तो भगवान दिखाई देंगे। तमाम प्रकार के प्रकृति स्वभाव घटा दें तो भगवान दिखाई देंगे। इतना वाक्य यदि कभी (शास्त्र में) होता न तो ये जो कितने ही साधु हैं, ये सभी मोक्षमार्ग पर चल पड़ते। अगर इतनी ही मिलावट रहित बात किसी ने कही होती तो!

### समझ लो हकीकत ज्ञानी के ज्ञान से

हमें तो कोई गालियाँ दे तो हम समझ जाते हैं कि ये अंबालाल पटेल को गाली दे रहे हैं, पुद्गल को गाली दे रहे हैं। आत्मा को तो वे जान ही नहीं सकते, पहचान ही नहीं सकते न! इसलिए 'हम'

स्वीकार नहीं करते। 'हमें' छूता ही नहीं, हम वीतराग रहते हैं! हमें उस पर राग-द्वेष नहीं होते, इसलिए फिर एक अवतारी या दो अवतारी होकर सब खत्म हो जाएगा!

आपको हमारे 'ज्ञान' की समझ से समझना हो तो 'व्यवस्थित' है, 'हिसाब है', ऐसा आपको समझना पड़ेगा। उससे आगे जाओगे तब 'मूल वस्तु' समझ में आएगी। 'बचानेवाला कोई बचा ही नहीं सकता, मारनेवाला कोई मार नहीं सकता। सबकुछ कुदरत का काम है यह।' 'व्यवस्थित' है, लेकिन 'व्यवस्थित' के अवलंबन के रूप में यह कौन कर रहा है? उस पूरे भाग को खुद जानता है कि (ये) सारी कुदरत की ही क्रियाएँ हैं।

(वास्तव में) कोई करता ही नहीं है। फूल चढ़ाते हैं, वह भी उसकी अवस्था है, पत्थर मारते हैं, वह भी उसकी अवस्था है। अंदर से जब फूल के परमाणु उड़ते हैं, तब बाहर से उसी समय फूल आकर गिरते हैं और जब अंदर पत्थर जैसे परमाणु उड़ते हैं तब बाहर से भी पत्थर आ गिरते हैं, समय से आ मिलते हैं।

कोई गाली दे तो उसका निबेड़ा ला देना, क्योंकि गाली देने की सत्ता किसी को नहीं है और अगर उसने दी तो, 'देयर इज़ समथिंग रोंग' (वहाँ कोई भूल है) उसका निबेड़ा ला देना।

### कॉमन सेन्स से हल करो प्रश्न

एक साहब से एक व्यक्ति आकर उल्टा-सीधा कहने लगा। 'कॉमनसेन्स' के कारण उन साहब पर ज़रा सा भी असर नहीं हुआ। देखो 'कॉमन सेन्स' था, इसलिए! 'कॉमनसेन्स' तो बहुत बड़ी चीज़ है। इससे हमें 'कॉमनसेन्स' का उदाहरण देखने को मिला कि इन साहब ने 'कॉमन सेन्स' का उपयोग किया। दूसरा कोई व्यक्ति तो वहाँ पर 'डिस्क्रेज' ही हो जाता न, यों ही! ज़बरदस्त 'डिप्रेशन' आ जाता।

लेकिन मैंने तो उनमें डिप्रेशन नहीं देखा। मैं यही देख रहा था कि डिप्रेशन आता है या नहीं? वह व्यक्ति न जाने क्या कुछ कह गया, तब भी 'डिप्रेशन' नहीं आया।

कॉमन सेन्स अर्थात् एवरीव्हेर एप्लिकेबल (हर जगह पर लागू होता है)। हिंदुस्तान के शायद ही किसी व्यक्ति में यह होता है, थोड़ा बहुत भी। नोनसेन्स भी (बुद्धिहीन भी) बहुत कम होते हैं और कॉमन सेन्सवाले भी कम होते हैं। नोन सेन्स पाँच-पचास लोग होते हैं, ज्यादा नहीं। बीचवाले ज्यादा होते हैं, सेन्सिटिव (संवेदनशील)! ये सभी सेन्सिटिवनेस के करीब के हैं। जरा कहा कि 'चंदूभाई में अक्ल नहीं है,' तो उस दिन वे पूरी रात नहीं सोते।

इसीलिए इन सभी से क्या कहता हूँ कि 'कॉमन सेन्स' से प्रश्नों को हल करो। कोई व्यक्ति चाहे कुछ भी बोल सकता है, उसके दिमाग पर आधारित है न! और कुछ आपका पुण्य (!) होगा तभी कहेगा न! वर्ना बिना पुण्य के कोई कहेगा!

### समझदारी से सुलझाओ अपमान के अवसर

यदि कोई आपका अपमान करे तो आप क्या करोगे? मेरा कहना है कि जहाँ सत्ता नहीं है, वहाँ कह देना कि 'पसंद है।' सत्ता नहीं हो तब क्या करोगे? वर्ना अगर ऐसा कहेंगे कि 'पसंद नहीं है' तो वह कचोटता रहेगा अंदर। पूरी रात कचोटता रहेगा, है न! आपको कभी कचोटा है?

**प्रश्नकर्ता :** कई रातों तक कचोटता रहता है, झटके लगते रहते हैं।

**दादाश्री :** लोग किस तरह दिन निकालते हैं, वही देखो न! पढ़े-लिखे लोग अपने दुःख को कम कर देते हैं, हो सके तब तक समझदारी से दुःख को कम कर देते हैं और उसे पूरा खत्म कर देते हैं। लेकिन जब खुद का नहीं चले तब फिर उलझ जाते हैं। पढ़े-लिखे लोगों में व्यावहारिक

बुद्धि नहीं होती इसलिए उलझन में पड़ जाते हैं। शिक्षण है, लेकिन व्यावहारिक बुद्धि नहीं है न! व्यावहारिक बुद्धि अलग चीज़ है। मुझे पढ़ना-लिखना नहीं आया, लेकिन व्यावहारिक बहुत अच्छी तरह आता है! मेट्रिक में फेल हुआ लेकिन व्यावहारिक बहुत अच्छी तरह से आता है।

हमें समभाव से *निकाल* करना है, ऐसा तय करना है। उसके बाद वैसा ही होता रहेगा। पहले हमारे मन में जो रहता था कि 'यह आदमी क्या समझता है अपने आप को।' हमारे वे भाव गलत (उल्टे) हो रहे थे। वे अब नहीं होने चाहिए। वह आपको कुछ भी करे, सामनेवाला व्यक्ति परेशान करे तो हमें उसमें हर्ज नहीं है।

### निश्चय समभाव से *निकाल* का ही

अगर किसी ने 'चंदूभाई' के ऑफिस में आकर उनका अपमान कर दिया कि, 'आपको व्यापार करना नहीं आता और आपने हमें परेशान कर दिया है,' इस तरह ऐसे कुछ भी शब्द कहे, तो तुरंत हमारी दृष्टि ज्ञान पर जाती है कि अपना यह ज्ञान क्या कहता है? तो, 'यह फाइल का समभाव से *निकाल* करो,' ऐसा होता है न? लेकिन अब उसने जो कहा, वह इस शरीर में जो मन वगैरह सभी हैं वे तुरंत पकड़ लेते हैं न, अंतःकरण तुरंत पकड़ लेता है। और उसका जवाब देने के लिए, हिंसक जवाब देने के लिए अंदर सब तमतमा जाते हैं, लेकिन अगर उस समय ये कोई जवाब नहीं दें और तय करें कि समभाव से *निकाल* करना है तो 'ओहोहो! अंदर लाल-लाल हो गया है,' उसे देखें, तो उस घड़ी यह आत्मा क्लियर (साफ) हो जाता है। जो तप को देखता है, वह है क्लियर आत्मा। वह तमतमाहट देखने के बाद फिर उसे शांति हो जाती है। कोई भी संयोग आए, चाहे वह तमतमाने का हो या शांति का हो लेकिन वह हमेशा वियोगी स्वभाव का होता है। वह उफान कुछ देर बाद थम जाता है, लेकिन एक बार तो बहुत तप

जाता है। उसे फिर यों अभ्यासपूर्वक देखें, तब आनंद आ जाता है लेकिन तप तो जाता ही नहीं। वह तप तो रहता ही है।

**प्रश्नकर्ता :** आपने कहा कि उसका समभाव से *निकाल* करना है और एक बार आपने ऐसा सिखाया था कि अपना ही वापस आया है।

**दादाश्री :** समभाव से *निकाल* करने के लिए क्यों कहा है? क्योंकि यह वापस आया है। इसलिए उसका समभाव से *निकाल* करना है। उसको लक्ष्य में रखकर हैं सभी (वाक्य)। एक-एक वाक्य परस्पर जुड़ा हुआ है। इसलिए यह जो एक-एक शब्द हम दे रहे हैं न, वे सभी दवाईयाँ हैं, असल में मेडिसिन है।

**राग नहीं, द्वेष नहीं वह समभाव**

**प्रश्नकर्ता :** दादा ने कहा है 'फाइलों का समभाव से *निकाल* करो,' तो उसका क्या कारण है? समभाव में क्या आता है?

**दादाश्री :** समभाव यानी हमें अगर उस पर प्यार आए तो वह गलत है। प्यार नहीं आने देना चाहिए। ऐसा कुछ करे कि अच्छा न लगे तो उस पर द्वेष नहीं आने देना है। राज़ी-नाराज़ नहीं होना है।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन आपने जो समताभाव कहा न, वह नहीं रह पाता।

**दादाश्री :** समताभाव रखना नहीं है, समभाव से फाइल का *निकाल* करना है। समभाव किसे कहते हैं कि आपको अगर कोई गालियाँ दे न, तो उस पर द्वेष नहीं हो और कोई अच्छा बोले तो राग नहीं हो। अच्छे पर राग नहीं और बूरे पर द्वेष नहीं, उसे समभाव कहते हैं। उस प्रकार समभाव से *निकाल* करो। समभाव से *निकाल* का अर्थ (मतलब) तो समझना चाहिए न? वह ज्ञानीपुरुष से समझना चाहिए। इस तरफ कोई गालियाँ दे रहा हो और उस तरफ कोई फूल चढ़ा रहा हो, तो फूलवाले पर राग नहीं

और गालियाँ देनेवाले पर द्वेष नहीं। मन में राग-द्वेष रहित रहकर *निकाल* करना है, और कुछ भी नहीं करना है।

डिसिज़न (निर्णय) सेट कर लिया हो कि इसका हमें समभाव से *निकाल* करना है। यानी पहले अगर कोई हँसता हुआ आए तो उसके साथ हँसते हुए *निकाल* करते थे। कोई चिढ़ता हुआ आए तो उसके साथ चिढ़कर *निकाल* करते थे लेकिन अब तो कोई हँसता हुआ आए तो भी समभाव से, कोई चिढ़ता हुआ आए तो भी समभाव से, हमें तो समभाव से ही *निकाल* करना है। अगर यहाँ पुलिसवालों की लाइन (कतार) लगी हो और वे चिल्ला रहे हों, चिढ़ रहे हों तो हम क्या करते हैं? समभाव से *निकाल* करते हुए जाते हैं न! अगर समभाव से *निकाल* नहीं करेंगे तो क्या होगा? पुलिसवाला डंडा मारेगा तो वहाँ पर हम समझदार बन जाते हैं न! वैसे ही यह समभाव से *निकाल* करना है और समझ जाना है। अर्थात् अब संपूर्ण (समभाव) रहे ऐसा करो।

**बहीखाते में जमा कर लो**

आपके बहीखाते में मान और अपमान का खाता रखो। जो कोई मान-अपमान देकर जाए उसे बहीखाते में जमा करते जाओ, उधार मत करना। चाहे कितना भी बड़ा या छोटा कड़वा डोज़ कोई दे जाए, तो उसे बहीखाते में जमा कर लेना। नक्की करो कि महीनेभर में 100 जितने अपमान जमा कर लेने हैं। जितने ज्यादा आएँ, उतना अधिक मुनाफा। यदि 100 के बजाय 70 मिलें, तो 30 का घाटा। फिर दूसरे महीने में 130 जमा करना। जिसके खाते में 300 अपमान जमा हो गए, उसे फिर अपमान का भय नहीं रहता। 'जब अपमान का भय नहीं रहेगा, तब कोई अपमान नहीं करेगा', यह नियम ही है। जब तक भय है, तब तक व्यापार। भय गया कि व्यापार बंद। वह फिर पार उतर जाता है।

- जय सच्चिदानंद



**दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स**

**5-7 दिसम्बर :** 8 साल के अंतराल के बाद मध्यप्रदेश के इंदौर शहर में पूज्य श्री का तीन दिवसीय सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम आयोजित हुआ। इंदौर एयरपोर्ट पर पूज्य श्री को मध्यप्रदेश की ट्रेडीशनल पधड़ी-खेस पहनाकर लगभग सौ स्थानिक महात्माओं ने उनका स्वगत किया। ज्ञानविधि से पहले और बाद के दिनों में भी प्रश्नोत्तरी सत्संग रखा गया और परिणामस्वरूप महात्माओं ने ज्ञानविधि से पहले और बाद में उठनेवाले प्रश्न पूछकर समाधान प्राप्त किया। काफी समय के बाद यहाँ ज्ञानविधि होने के कारण लगभग 1250 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की और ज्ञानविधि के बाद आयोजित दर्शन कार्यक्रम में पूज्य श्री के दर्शन करके धन्य हो गए। मौर्या हिल्स के प्रतिष्ठित मंदिर प्रांगण में सेवार्थी सत्संग-दर्शन का 150 महात्माओं ने लाभ लिया। थोड़े ही समय में इंदौर में बच्चों के लिए जीएनसी सेंटर शुरू करने की घोषणा की गई, जिसमें 100 से भी अधिक बच्चों ने तुरंत ही रजिस्ट्रेशन करवाया था।

**9-11 दिसम्बर :** 5 वर्ष के अंतराल के बाद पाटण शहर में सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम आयोजित हुआ। छोटा शहर होने के बावजूद भी आसपास के लोगों में आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए अत्यंत उत्साह देखा गया। 1400 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की। और आप्तपुत्र द्वारा फॉलोअप सत्संग में भी ज्ञान प्राप्त किए हुए महात्मा और अधिक समझ प्राप्त करने के लिए आए थे। पूज्य श्री स्थानिक महात्माओं के साथ प्रसिद्ध राण की वाव देखने गए। स्थानिक महात्माओं के लिए सेवार्थी सत्संग दर्शन कार्यक्रम भी आयोजित किया गया जिसमें बच्चों ने भी प्रश्न पूछे।

**19-26 दिसम्बर :** अडालज त्रिमंदिर संकुल में पारायण के प्रथम दिन परम पूज्य दादाश्री की जो भावना थी कि आप्तवाणी श्रेणी-14 तक प्रकट होनी चाहिए, वह भावना भव्य समारोह के साथ साकार हुई। दिनांक 19 शाम को अंबा टाउनशीप में भव्य शोभायात्रा का आयोजन करने में आया। जिसमें 400 बच्चों-युवानों ने प्रदर्शन किया। आप्तवाणी श्रेणी 1 से 14 पुस्तक आकार की प्रतिकृति तैयार की गई। इसके अलावा पूज्य नीरू माँ के समर्पण, श्री सीमंधर स्वामी और दादा - भगवान - नीरू माँ का रथ, अक्रम विज्ञान का प्रचार समग्र विश्व में हो ऐसी थीम पर आधारित रथ शोभायात्रा में थे। अंत में पूज्य श्री का रथ भी शोभायात्रा में शामिल हुआ। दर्शन के लिए महात्मा रोड के दोनों तरफ खड़े हुए थे, बहुत ही आनंदपूर्वक महात्माओं ने शोभायात्रा का आनंद उठाया। उसके बाद एटीपीएल पार्किंग मैदान में बनाए गए भव्य स्टेज पर बालिकाओं ने सरस्वती वंदना पर सुंदर नृत्य प्रस्तुत किया। परम पूज्य दादाश्री की भावना और पूज्य नीरू माँ के योगदान पर शोर्ट विडियो भी दिखाए गए। अंत में पूज्य श्री ने आप्तवाणी श्रेणी-14 भाग-5 का विमोचन किया, तब पुष्पवृष्टि की गई। लगभग 12000 महात्माओं ने इस अद्वितीय कार्यक्रम का आनंद उठाया। दादाश्री की वाणी पुस्तकों के रूप में प्रकट करने के पीछे पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई का जो योगदान है उसकी सुंदर झँकीवाला प्रदर्शन भी 9 दिनों के लिए रखा गया और उस पर सुंदर डॉक्यूमेन्टरी फिल्म दिखाई गई। पारायण के आठ दिनों के दौरान आप्तवाणी श्रेणी 13 पर वाँचन-सत्संग हुए। महात्माओं को ऐसा अनुभव हो रहा था कि दिनोंदिन नए स्पष्टीकरण मिल रहे हैं और प्रगति के लिए नई ज्ञान चाबियाँ मिल रही हैं। अन्य गुजराती पुस्तकें ऑडियो बुक फॉरमेट में 8 और 9 नंबर की सी.डी में पूज्य नीरू माँ रचित समर्पण पदों की स्वरमणा-28 ऑडियो सी.डी का पूज्य श्री के हस्तों से विमोचन किया गया।

**27 दिसम्बर :** पूज्य श्री द्वारा श्री सीमंधर स्वामी भगवान की छोटी मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा विधि की गई। प्रतिष्ठा विधि के समय महात्माओं ने सामूहिक रूप से विधियाँ की थीं। लगभग 1018 छोटी-बड़ी मूर्तियों की विधि होने के बाद महात्माओं ने प्रक्षाल-पूजन-आरती की। अंत में सिर पर मूर्ति रखकर महात्मा गरबा करके आनंदित हो उठे। छोटे-बड़े सभी महात्माओं ने प्राणप्रतिष्ठा का आनंद उठाया।

**5-7 जनवरी :** 3 साल के बाद नडियाद में पूज्य श्री का सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम आयोजित हुआ। ज्ञानविधि में 825 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की। सेवार्थी सत्संग में 250 स्थानिक महात्मा थे। एलएमएचटी के बच्चों ने पूज्य श्री के समक्ष नृत्य किया। सत्संग के बाद महात्माओं ने पूज्य श्री के दर्शन और उनके साथ भोजन प्रसाद का आनंद उठाया। नडियाद के प्रसिद्ध संतराम मंदिर में पूज्य श्री दर्शन के लिए गए और वहाँ के संत से मिले थे।

**8-11 जनवरी :** बड़ौदा में वाघोडिया रोड विस्तार में आयोजित सत्संग ज्ञानविधि दौरान 1250 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। सेवार्थी सत्संग में लगभग 700 महात्माओं ने सत्संग-दर्शन का लाभ लिया और एलएमएचटी के बच्चों ने भी पूज्य श्री के समक्ष अपना प्रेजेंटेशन किया। इस बार सत्संग कार्यक्रम दौरान हर रोज जीएनसी, सिनियर सिटिजन, मूक-बधीर स्कूल एवं अन्य स्कूल के विद्यार्थियों के ग्रुप ने सत्संग स्थल पर पूज्य श्री का अभिवादन किया। पूज्य श्री ने बड़ौदा त्रिमंदिर साइट पर जाकर मंदिर निर्माण के बारे में जानकारी प्राप्त की।

## दादावाणी

### आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

<b>जबलपुर</b>	26 फरवरी	संपर्क : 9425160428	<b>गोरखपुर</b>	5-6 अप्रैल	संपर्क : 7309061683
<b>पटना</b>	3 अप्रैल	संपर्क : 7352723132	<b>कानपुर</b>	9 अप्रैल	संपर्क : 9452525981
<b>बिहार शरीफ</b>	4 अप्रैल	संपर्क : 9097379997	<b>आगरा</b>	10 अप्रैल	संपर्क : 9319128468
<b>हजारीबाग</b>	5 अप्रैल	संपर्क : 9798126101	<b>पाली</b>	17 अप्रैल	संपर्क : 9461251542
<b>धनबाद</b>	7 अप्रैल	संपर्क : 9431191375	<b>पूणे</b>	8 व 10 अप्रैल	संपर्क : 7218473468
<b>रांची</b>	8 अप्रैल	संपर्क : 9327010101	<b>सतारा</b>	9 अप्रैल	संपर्क : 7058503230
<b>राइपुर</b>	9-10 अप्रैल	संपर्क : 9329644433	<b>नासिक</b>	11 अप्रैल	संपर्क : 9021232111
<b>दुर्ग</b>	11 अप्रैल	संपर्क : 9300012330	<b>औरंगाबाद</b>	12 अप्रैल	संपर्क : 8308008897
<b>उतई</b>	12 अप्रैल	संपर्क : 9827481336	<b>जलगाँव</b>	13 अप्रैल	संपर्क : 9422354985
<b>राजनंदगाँव</b>	13 अप्रैल	संपर्क : 7828415771	<b>अमरावती</b>	15-16 अप्रैल	संपर्क : 9422335982
<b>वाराणसी</b>	3-4 अप्रैल	संपर्क : 9795228541	<b>नागपुर</b>	17 अप्रैल	संपर्क : 9970059233

समय और स्थल की जानकारी के लिए संपर्क करें

<b>इन्दौर</b>	दिनांक : 27 फरवरी	समय : शाम 5-30 से 8	संपर्क : 9039936173
स्थल :	श्री माँ कनकेश्वरी देवी संस्कार केन्द्र, रेडीमेड कोम्प्लेक्स के पास, परदेशीपुरा, इन्दौर.		
<b>इन्दौर</b>	दिनांक : 28 फरवरी	समय : शाम 4 से 7	संपर्क : 9039936173
स्थल :	गुजराती प्राथमिक विद्यालय, नसिया रोड, सरवटे बस स्टैण्ड, इन्दौर.		
<b>पटना</b>	दिनांक : 1-2 अप्रैल - आप्तपुत्रों के संग सत्संग शिविर		संपर्क : 7352723132
स्थल :	ठाकुर प्रसाद कम्युनिटी होल, कीदवाइपुरी, इन्कम टेक्ष के पास, गोलंबर (नोर्थ), पटना.		
<b>लखनौ</b>	दिनांक : 1-2 अप्रैल	समय : शाम 4 से 7	संपर्क : 9452904656
स्थल :	मधुर संगीत विद्यालय, 563/74, चित्रगुप्त नगर, आलमबाग, लखनौ.		
<b>जलगाँव</b>	दिनांक : 14 अप्रैल	समय : शाम 4 से 6-30	संपर्क : 9422354985
स्थल :	रीगल पेलेस होल, तीसरी मंजील, बस स्टैण्ड के पास, एस.पी. ओफिस, जलगाँव.		

### पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत	+ 'आस्था' पर सोम से शनि रात 10-20 से 10-40 (हिन्दी में)
	+ 'डीडी'-इन्डिया पर हर रोज सुबह 8 से 8-30 तथा शाम 6-30 से 7 (हिन्दी में)
	+ 'दूरदर्शन'-बिहार पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 तथा शाम 6-30 से 7 (हिन्दी में)
UK	+ 'वीनस' टीवी पर हर रोज सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)

### पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत	+ 'दूरदर्शन'-नेशनल पर सोम से शुक्र सुबह 8-30 से 9, शनि सुबह 9 से 9-30, रवि सुबह 6-30 से 7
	+ 'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
	+ 'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश पर हर रोज रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
	+ 'साधना' पर हर रोज शाम 7 से 7-30 (हिन्दी में)
	+ 'दूरदर्शन' गिरनार पर मंगल से गुरु रात 10 से 10-30, शुक्र से रवि रात 9-30 से 10-30 (गुजराती में)
	+ 'दूरदर्शन'-सह्याद्रि पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
USA	+ 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह 11 से 11-30 EST
	+ 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 EST (हिन्दी में)

USA-UK-Africa-Aus. + 'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज रात 10 से 10-30 (गुजराती में) विदेशों में एवं गुजराती में टीवी कार्यक्रम जारी है।

## दादावाणी

### आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

#### मुंबई

दि. 26-27 फरवरी (शुक्र-शनि), शाम 6 से 9 - सत्संग तथा 28 फरवरी (रवि), शाम 5-30 से 9 - ज्ञानविधि  
स्थल : रेल्वे पुलीस कवायत ग्राउन्ड, कुकरेजा टावर के पीछे, वल्लभबाग एक्स. लेन, घाटकोपर (इस्ट).

दि. 29 फरवरी (सोम), शाम 6 से 9 - आप्तपुत्र सत्संग

स्थल : भूरीबेन गोलवाला ओडिटोरीयम, कामा लेन, घाटकोपर (वेस्ट).

संपर्क : 9879137971

### अंजार त्रिमंदिर का प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

दि. 6 मार्च 2016 (रविवार)

प्राणप्रतिष्ठा : सुबह 9-30 से 1, प्रक्षाल-पूजन-दर्शन-आरती : शाम 4 से 7, भक्ति : रात 8-30 से 10

स्थल : अंजार त्रिमंदिर, अंजार-मुन्द्रा रोड, सीनोग्रा पाटीया के पास, सीनोग्रा गाँव, ता.-अंजार. संपर्क : 9574008126

विशेष सूचना : १) प्राणप्रतिष्ठा कार्यक्रम केवल एक दिन का है, इसलिए रात्रि आवास की सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाएगी। जो महात्मा-मुमुक्षु उसी दिन सीधे ही महोत्सव स्थल पर पहुँचेंगे, उनके लिए बाथरूम-टोइलेट की सुविधा स्थल पर रहेगी।

२) त्रिमंदिर अंजार रेल्वे स्टेशन से 7 कीमी की दूरी पर है। ३) कार्यक्रम में भाग लेने के लिए रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है।  
4 मार्च (शुक्र), शाम 4 से 7 - सत्संग तथा 5 मार्च (शनि) शाम 3-30 से 7- ज्ञानविधि - स्थानिक मुमुक्षुओं के लिए

#### अडालज त्रिमंदिर

दि. 19 मार्च (शनि), सुबह 10 से 12 - पू. नीरू माँ की दसवी पुण्यतिथि पर स्पे. सीडी तथा अन्य कार्यक्रम  
शाम 4-30 से 10 - आप्तसिंचन नये साधकों की समर्पण विधि तथा विशेष भक्ति कार्यक्रम

दि. 20 मार्च (रवि), शाम 4-30 से 7 - ज्ञानविधि

### अडालज त्रिमंदिर में PMHT (पेरेंट्स महात्मा) शिविर

दि. 5-9 मई (शनि-बुध) - सत्संग समय की घोषणा बाकी

सूचना : 1) यह शिविर ज्ञान लिए हुए विवाहित महात्माओं के लिए ही रखी गई है। 2) शिविर में भाग लेने के लिए अपने नज्दिकी सेन्टर में और अगर नज्दिक में कोई सेन्टर नहीं है, तो अडालज त्रिमंदिर के फोन नं. (079) 39830400 (सुबह ९-३० से १२ तथा दोपहर ३ से ६) पर अपना रजिस्ट्रेशन करवाए।

### अडालज त्रिमंदिर में हिन्दी सत्संग शिविर - वर्ष 2016

सत्संग शिविर : दि. 27-28 तथा 30 मई ज्ञानविधि : दि. 29 मई

तीर्थ यात्रा : दि. 31 मई - पूज्यश्री के संग यात्रा

सूचना : यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। शिविर-यात्रा रजिस्ट्रेशन संबंधित जानकारी मार्च 2016 के अंक में दी जाएगी। यदि आप 31 मई को आयोजित यात्रा में शामिल होनेवाले हों, तो आपका वापसी टिकट 1 जून का लें। रेल्वे टिकट रिझर्वेशन चार महिने पहले एडवान्स में होता है, इसलिए यह जानकारी आपको टिकट बुक करने हेतु दी जा रही है।

त्रिमंदिरों के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, राजकोट : 9924343478, भूज : 9924345588, गोधरा : 9723707738,

मोरबी : (02822)297097, सुरेन्द्रनगर : 9737048322, अमरेली : 9924344460,

अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद: (079) 27540408, मुंबई: 9323528901, वडोदरा (दादा मंदिर) : 9924343335,

दिल्ली: 9810098564, बेंगलूर: 9590979099, कोलकता: 9830093230

यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), यु.के.: +44 330-111-DADA (3232), ऑस्ट्रेलिया: +61 421127947

फरवरी 2016  
वर्ष- 11 अंक-4  
अखंड क्रमांक - 124

## दादावाणी

Date Of Publication On 15<sup>th</sup> Of Every Month  
RNI No. GUJHIN/2005/17258  
Reg. No. GAMC - 1500/2015-2017  
Valid up to 31-12-2017  
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2015  
Valid up to 31-12-2017  
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1  
on 15th of each month.

### मान और अपमान, ये सब पुद्गल की भीख हैं

हम तो क्या कहते हैं? अपमान पसंद नहीं है तो उसमें हर्ज नहीं है, लेकिन मान की भीख नहीं रखनी है। जैसे-जैसे अपमान खाते जाएँगे, वैसे-वैसे अपमान न झेल पाने की कमजोरी कम होती जाएगी। जितना दिया है, वह वापस आता जाएगा। मान की भीख हो तो परेशानी है। अपमान नहीं होने देने के लिए ही वहीं पर उपयोग रहा करे, संभालता रहे, वह भीख कहलाती है। वर्ना चारित्र मोहनीय तो निकाली मोह है। आया और गया। कुछ लेना नहीं और देना नहीं। मान और अपमान, ये सब पुद्गल की भीख हैं। आत्मा के लिए मान-अपमान हैं ही नहीं। वह भिखारी नहीं है कि उसे मान-अपमान की पड़ी हो। वह तो पूरे ब्रह्मांड का राजा कहलाता है, ब्रह्मांड का भगवान कहलाता है।

- दादाश्री



Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.